Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 42 • 22 जुलाई - 28 जुलाई, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 20-07-2024 • पेज 16 • ₹ 10 रुपये

अर्हत् उवाच

वुसिते विगयगिद्धी य,
आयाणं सारक्खए।
संयमी व्यक्ति धर्म में स्थित रहे। वह किसी भी इंद्रिय-विषय में आसक्त न बने और आत्मा का संरक्षण करे।

डायमंड सिटी सूरत में महाश्रमण

सूरत की जनता को भीतरी जगत से साक्षात्कार कराने, आंतरिक दृष्टि से स्वच्छ बनाने और अध्यात्म से हरा-भरा बनाने तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम् अधिशास्ता युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सूरत की भगवान महावीर यूनिवर्सिटी के संयम विहार में किया मंगल प्रवेश।

सदा धर्म में रमा रहे हमारा मनः आचार्यश्री महाश्रमण

भगवान महावीर यूनिवर्सिटी में चातुर्मासिक प्रवास हेतु पधारे महावीर के प्रतिनिधि

सूरत।
15 जुलाई, 2024

सिल्क सिटी एवं डायमंड नगरी के रूप में विख्यात सूरत शहर में तेरापंथ के कोहिनूर धर्म दिवाकर युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी सन् 2024 का चातुर्मास करने हेतु अपनी धवल सेना के साथ तेरापंथ भवन सिटीलाइट से विहार कर भगवान महावीर युनिवर्सिटी में पधारे। विशाल महावीर समवसरण में महावीर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया- दसवेंआलियं आगम का आद्य श्लोक धर्म की महिमा का आख्यान करने वाला है। धर्म क्या है? इसका निर्देशन भी इस श्लोक में हमें प्राप्त होता है।

संभवतः हमारे धर्म संघ में चारित्रात्माओं के द्वारा, आवश्यक के सिवाय सबसे ज्यादा कंठस्थ किया जाने वाला आगम दसवेंआलियं है। यह आगम मुनि मनक के लिए आचार्य शय्यंभव द्वारा निर्यूढ़ किया गया था। इस दसवेंआलियं को आगम मित्र, कल्याण मित्र भी बनाया जा सकता है। साधु-साध्वियां और समणियां इसे स्मृति गत रखने का प्रयास करें। इस मित्र को निकट रखने का उपाय है कि बार-बार इसका पुनरावर्तन होता रहे।

हमारे जीवन में हम मंगल की, निर्विघ्नता की कामना करते हैं। मंगल के लिए आदमी प्रयास भी करता है, मुहूर्त भी देखा जाता है। कुछ पदार्थ भी मंगल के लिए काम में लिए जाते हैं। मंगलपाठ भी मंगल के लिए सुना जाता है। आदमी खुद का भी मंगल चाहता है और दूसरों के प्रति भी मंगलकामना की जाती है।

शास्त्रकार ने धर्म को इन सबसे बड़ा मंगल बताया है। धर्म उत्कृष्ट मंगल है। अरहंत, सिद्ध, साधु और केवली प्रज्ञप्त धर्म मंगल है। इनमें तीन तो कार्य मंगल हैं और चौथा कारण मंगल है। धर्म कारण है, धर्म से ही अरहंत, सिद्ध और साधु बने हैं।

प्रश्न हो सकता है, कौन सा धर्म मंगल है? शास्त्रकार ने किसी धर्म का नाम नहीं लिया और तो और जैन धर्म का आगम है पर जैन धर्म का भी नाम नहीं लिया। नाम ऐसा लिया है, जो सर्वमान्य हो जाए। वह है- अहिसा, संयम और तप मंगल है। इन तीन के सिवाय और कोई धर्म अवशेष रहा नहीं।

शास्त्रकार ने धर्म को महिमा बताई कि उसको देव भी नमस्कार करते हैं जिसका मन सदा धर्म में रमा रहता है। मन का कितना महत्व है, भीतर के भाव, परिणाम, लेश्या, अध्यवसाय कैसे हैं, इनका महत्व है। हमारा मन हमेशा धर्म में रमा रहे, यह अपेक्षा है।

आज हमने चातुर्मासिक मंगल प्रवेश किया है। 2024 सूरत चतुर्मास के संदर्भ में भगवान महावीर युनिवर्सिटी के स्थान में हमने चातुर्मासिक प्रवेश किया। भगवान महावीर के नाम से युनिवर्सिटी में हमारा चातुर्मास संभवतः पहली बार ही हो रहा है। विद्या का स्थान तो विद्या का मंदिर होता है, यहां का स्थान विद्या मन्दिर के साथ धर्म का मंदिर भी बनने जा रहा है। इधर महावीर समवसरण भी है और हमारे मुख्य मुनि भी महावीर हैं।

अनेक संत-साध्वियां हमारे साथ हैं। 'शासनश्री' मुनि श्री धर्मरूचिजी भी पधार गए हैं, गुरुकुलवास में दीक्षा पर्याय में आप सबसे बड़े हैं। इस चातुर्मास की पृष्ठभूमि में मुनिश्री उदितकुमार जी की विषेश भूमिका रही है, आप बहुश्रुत परिषद् के सदस्य भी हैं।

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्म संघ के आद्यप्रवर्तक आचार्य भिक्षु का स्मरण कर नमन करता हूं। उनकी उतरवर्ती आचार्य परम्परा में आचार्य श्री तुलसी एवं आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी को हमने देखा है। इन सबको श्रद्धा के साथ नमन करता हूं। दीक्षा प्रदाता मुनि सुमेरमलजी स्वामी का स्मरण कर नमन करता हूं। साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी, साध्वीवर्या संबुद्धयशाजी और मुख्यमुनि महावीरकुमारजी आदि साथ हैं, सभी अच्छा कार्य करते रहें। सभी साधु-साध्वियां समय का अच्छा उपयोग करते रहें।

सूरत के इस चातुर्मास में खूब अच्छी धार्मिक जागरणा होती रहे। जैन-अजैन विभिन्न क्षेत्रों के लोग हैं, उन सभी में आध्यात्मिक धार्मिक कार्य भी यथासंभव होते रहें।

गृहस्थों के जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति की भावना रहे। यहां की चतुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के सब कार्यकर्ताओं में आपस में सौहार्द बना रहे। ज्यादा तनाव नहीं हो, शांति बनी रहे। सुचारू रूप से आध्यात्मिक गतिविधियां चलती रहें। गुजरात राज्य के गृहमंत्री हर्ष भाई सिंघवी ने पूज्यवर के दर्शन किये। हर्षभाई संघवी ने सूरत शहर में आचार्य श्री महाश्रमण का स्वागत किया। (शेष पेज 4 पर)

करने में विवेक और होने में हो समता : आचार्यश्री महाश्रमण

सिटीलाईट, सूरत।
14 जुलाई, 2024

अध्यात्म जगत के महासूर्य आचार्यश्री महाश्रमणजी का अध्यात्म नगरी सूरत के सिटी लाइट तेरापंथ भवन में अपनी धवल सेना के साथ पावन पदार्पण हुआ। विशाल जन मेदिनी को आर्हत् वांग्मय का रसास्वाद कराते हुए परम पावन आचार्य प्रवर ने फरमाया कि हमारी दुनिया में सुख भी अनुभूत होता है तो दुःख भी देखने को मिलता है। प्रश्न होता है- दुःख से छुटकारा कैसे प्राप्त हो?

हम सुख चाहते हैं, दुःख से विमुक्त होना चाहते हैं। भगवान महावीर ने अपने शिष्यों से पूछा- सन्तों! प्राणी को भय किससे लगता है? भगवान ने ही समाधान देते हुए फरमाया- प्राणी को दुःख से भय लगता है। पुनः प्रश्न किया कि इस दुःख को किसने पैदा किया? पुनः भगवान ने ही उत्तर देते हुए फरमाया कि जीव स्वयं अपने प्रमाद से दुःखी होता है।

दुःख दो प्रकार का बताया गया है- जरा दुःख और शोक दुःख। शारीरिक दुःख और मानसिक दुःख। रोग, बीमारी आदि शारीरिक कष्ट, प्रिय वियोग, व्यापर में घाटा, कार्याधिक्यता से तनाव, चिंता आदि मानसिक दुःख हो सकते हैं। इन दुःखों से छुटकारा कैसे हो? शास्त्र में बताया गया - हे पुरूष! अपने आप का निग्रह करो। स्वयं का संयम करोगे तो तुम दुःख से मुक्त हो जाओगे।

कोई हमें अपशब्द कह दे, यदि हम उसे ग्रहण करते हैं तो हम दुखी बन जाते हैं और उसे ग्रहण न करें तो हम दुःख मुक्त रह सकते हैं। दूसरों के कहने से न कोई साहुकार होता है और न ही कोई चोर होता है। दूसरा निंदा, अपमान कर दे तो भी शांति में रहें। कहा गया है कि जिसके पास क्षमा रूपी शस्त्र है, उसका कोई क्या बिगाड़ सकता है। मैदान में जहां तृण है वहां आग लग सकती है। जहां तृण नहीं वहां आग लगने की संभावना नहीं है। हम अपना संयम, निग्रह रखें तो हम दुःख से मुक्त रह सकते हैं।

'आप भला तो जग भला।' व्यक्ति स्वयं भला रहेगा तो सभी उसके प्रति भले रह सकेंगे और वह दुःखों से दूर भी रह सकेगा। दूसरों को तो हम वश में नहीं कर सकते पर स्वयं का निग्रह तो कर सकते हैं। मनुष्य वाणी और इन्द्रियों का संयम रखे तो दुःखों से मुक्त हो सकता है।

कषाय की चेतना, क्रोध, मान, माया, लोभ से दुःख उत्पन्न होता है। जीवन में संतोष रहे, हमारे कषाय शांत हों, उन पर संयम रहे। जितना असद् चिन्तन होता है, वह दुःख उत्पन्न करने वाला हो सकता है। चिन्तन यह रहे- जो हुआ सो अच्छे के लिए हुआ है।

'हुआ और होगा भी जो, वह सब भला नितान्त।
परम शांति के हेतू हैं, ये दो चिन्तन कान्त।।

होना और करना अलग-अलग चीज है। करना विवेक से चाहिए, करने से पहले सोचें, करने के बाद जो होगा उसे स्वीकार करें। (शेष पेज 4 पर)

साधु रहे शांति, क्षांति और समता की मूर्ति : आचार्यश्री महाश्रमण

पूज्य प्रवर आचार्यश्री महाश्रमणजी ने किया लिंबायत से सूरत की सीमा में मंगल प्रवेश

लिंबायत।
13 जुलाई, 2024

विश्व विभूति, जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमणजी कड़ोदरा से 13 किलोमीटर का विहार कर लिंबायत के महर्षि आस्तिक सार्वजनिक हाई स्कूल में पधारे। पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया कि निर्ग्रन्थ साधु त्यागमूर्ति, अहिंसामूर्ति होना चाहिए। किसी को भी तन-मन-वचन से कष्ट नहीं देने वाला हो। ऐसे शुद्ध साधु का मुख दर्शन करने से, श्रद्धा से वन्दन करने से दर्शन, वंदन करने वाले प्राणी का पाप झड़ता है।

साधु के मन में दया, अनुकम्पा, करूणा की चेतना होनी चाहिये। साधु शांतिमूर्ति होना चाहिये। संत वह होता है, जो शांत रहता है। अशांत रहने वाले में संतता की कमी होती है। साधु क्षांतिमूर्ति, समतामूर्ति भी रहे। साधुओं का अपना संसार है। वे सांसारिक संबंधों से उपर ऊठे हुए होते हैं, वे अध्यात्म और परमतत्त्व से जुड़े होते हैं। साधु तो अणगार होते हैं, भिक्षु होते हैं। वास्तव में तो त्यागी साधु तो दुनिया की विभूतियां होती है। जो पांच महाव्रतों का तीन करण, तीन योग से नियम ले चुके हैं वे दुनिया के बड़े आदमी होते हैं। साधु को राजा, राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री भी वन्दन करते हैं। देव भी उसको नमस्कार करते हैं, जिसका मन सदा धर्म में रत रहता है। संयम और साधुता का महत्त्व है।

गृहस्थ को भी धर्म करने का अधिकार है। साधु रत्नों की बड़ी माला है तो श्रावक रत्नों की छोटी माला है। कोई-कोई गृहस्थ भी उस वेष में, भावों में साधुता आ जाने से केवलज्ञान को प्राप्त कर सकता है। आचार्य श्री तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत के छोटे-छोटे नियमों की गृहस्थ भी साधना कर सकते हैं। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने अहिंसा यात्रा में अहिंसक चेतना का जागरण और नैतिक मूल्यों के विकास की बात बताई थी और मैं तीन बातों सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के बारे में बताया करता हूँ। गृहस्थों के जीवन में शांति रहे।

कहा गया है - "क्या करेगा प्यार वह ईमान से, क्या करेगा प्यार वह भगवान से। जन्म लेकर गोद में इंसान की, कर सका न प्यार जो इंसान से।।"

सब जीवों के प्रति हमारे मन में मैत्री की भावना होनी चाहिए। छोटे-छोटे प्राणियों को भी बिना प्रयोजन कष्ट नहीं दें। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने मंगल उद्बोधन में कहा कि अनेक चीजें मधुर हो सकती है पर जिसका मन जिस कार्य में लग जाता है, उसके लिए वही मधुर हो जाता है। सूरतवासियों के लिए आचार्यप्रवर का शुभागमन मधुरता का निमित्त बन रहा है। जहां-जहां आचार्यप्रवर पधारे, आपका प्रभावशाली व्यक्तित्व उभरकर सामने आया। आचार्यप्रवर का मन-वचन और इन्द्रियों का संयम सधा हुआ है। इसलिए आपका व्यक्तित्व प्रभावशाली है, तेजस्वी है। आपकी कथनी-करणी में समानता है, तभी जन-जन का आपके प्रति आकर्षण है।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय विधायक संगीता बेन पाटिल, सूरत प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष संजय सुराणा, लिंबायत सभा अध्यक्ष लालचंद चोरडिया, अनिल चिंडालिया, जवेरीलाल दुगड़, रतनलाल भलावत, तेयुप से धीरज भलावत, महिला मंडल से मंजू बेन सिंघवी, अर्जुन मेडतवाल, चित्रकूट वैष्णव सम्प्रदाय से धनपति शास्त्री, मुस्लिम समाज से जे.सी. राज, महर्षि आस्तिक हाई स्कूल के चेयरमैन गंभीरसिंह, लक्ष्मीलाल गोखरू आदि ने अपने हृदयोद्गार प्रस्तुत किए।

प्रवास व्यवस्था समिति, लिंबायत सभा, युवक परिषद, महिला मंडल ने स्वागत गीतों की प्रस्तुति दी। ज्ञानशाला की सुन्दर प्रस्तुति हुई। संगीतादेवी बुरड़ ने मासखमण तप (30), उकचंद बुरड़ ने 8 एवं मोहित बुरड़ ने 13 की तपस्या का गुरुदेव से प्रत्याख्यान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

सहयोग की भावना ही समाज, संघ या देश का है आधार : आचार्यश्री महाश्रमण

चलथान कड़ोदरा।
12 जुलाई, 2024

तेरापंथ धर्म संघ के एकादशम अधिशास्ता आचार्यश्री महाश्रमणजी अपनी धवल सेना के साथ चलथान कड़ोदरा के श्री नारायण मुनि देव नर्सिंग कॉलेज पधारे। परम पावन ने जिनवाणी की अमृतवर्षा करते हुए फरमाया कि दुनिया में हम अकेले हैं या बहुत हैं यह एक प्रश्न है।

मैं अकेला हूं यह बात तथ्य पूर्ण प्रतीत हो रही है, क्योंकि आत्मा अकेली है। आदमी अकेला जन्म लेता है और अकेला ही एक दिन अवसान को प्राप्त हो जाता है। अकेला कर्म का बन्धन करता है और अकेला ही उसका फल भोगता है। एक आदमी को वेदना होती है, दूसरे सहानुभूति दिखाते हैं पर वह वेदना तो खुद को ही सहनी पड़ती है। यह अनेकान्त का एक दृष्टिकोण है कि मैं अकेला आया हूं, मुझे अकेला ही जाना है। मेरे कृत कर्मों का भुगतान मुझे ही करना है। परिवार में रहकर भी मैं अकेला हूं।अनेकान्त की दो दृष्टियां मानी जा सकती हैं- एक नैश्चयिक दृष्टि और दूसरी व्यावहारिक दृष्टि। नैश्चयिक दृष्टि से आत्मा अकेली है। मेरा कोई नही है और मैं किसी का नही हूं। व्यक्ति अपने पुरुषार्थ पर चले, दूसरे साथी हैं तो ठीक है, पर दूसरों की ज्यादा अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए। अकेले कदम बढ़ाते-बढ़ाते आदमी बहुत कुछ प्राप्त कर सकता है। मंद गति वाली चींटी भी चलते-चलते सैंकड़ों योजन जा सकती है और यदि पुरुषार्थ नहीं है तो तीव्र गति वाला गरुड़ भी आगे नहीं बढ़ सकता।

व्यवहार की दृष्टि से देखें तो हमारे बहुत सहयोगी हैं। समुदाय हैं, संघ है, इतने लोग साथ हैं, एक को तकलीफ हुई तो सेवा देने कितने-कितने लोग आ जाते हैं। एकता में शक्ति होती है, सुख दुःख

में कितने साथ खड़े रहते हैं। इस दृष्टि से हम अनेक हैं। जहां समाज है, समूह है, वहां आदमी अकेला नहीं है। जहां आत्मा के कल्याण की बात है, कर्मों को बांधने और भोगने की बात है वहां यह चिंतन रहे कि मैं अकेला हूं। यह एकत्व का चिंतन है। व्यवहारिक जगत में हम साथ हैं, सेवा-सहयोग के लिए तैयार हैं। "परस्परोपग्रहो जीवानाम्" - जीवों का परस्पर उपग्रह, सहयोग होता है। छः द्रव्य हमारा कितना सहयोग करते हैं, जीवास्तिकाय जीवों का एक दूसरे का परस्पर सहयोग होता हैं। तकलीफ में दूसरे के मददगार बनो, सहयोग की भावना ही समाज, संघ या देश का आधार है। लौकिक सहायता भी की जाती है, हम आध्यात्मिक सहयोग भी करने का प्रयास करें।

स्वामीनारायण संप्रदाय के के.पी. शास्त्री ने अपनी भावना अभिव्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य महाश्रमणजी जैसे महापुरुष पिछले सौ वर्षों में हुए नहीं हैं और आने वाले सौ वर्षों में होंगे भी नहीं।

पूज्यवर के स्वागत में सभा अध्यक्ष संजय बाफना, दीपक खाब्या, राकेश चपलोत अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल गीत, भिक्षु भजन मंडली, कन्या मंडल, ज्ञानशाला द्वारा सुन्दर प्रस्तुतियां दी गई।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

महामना आचार्य श्री भिक्षु के जन्मोत्सव पर विशेष

आरती दीपांनंदन की

● 'शासनश्री' साध्वी मंजुप्रभा ●

आरती दीपांनंदन की,
बल्लुसुत कलुष निकंदन की।
सत्य साधक आनंदघन की,
प्रणति लो गण नंदनवन की।।

कंटीली संयम की राहें,
चले, नहीं किंचित घबराये।
समस्या बादल मंडराये,
बने बजरंग, धैर्य था संग, नहीं बिदरंग,
पिपासा शिव सुख स्यंदन की।।

किया अगम आगम मंथन,
हकीकत का मिला मक्खन।
हुआ आत्मा में अनुकंपन,
जगाया जोश, सहा आक्रोश, बुलंद था होश,
छोड़ चिंता गुरु बंधन की।।

थिरपाल फतेह ने की अर्चा,
कि बाटो तेरापंथ पर्चा।
करो अंटी का अब खर्चा,
वो अमृत बाण, सुणी गणराण, चढ़े खरसाण,
कि महकी खुशबू गणचंदन की।।

जागरण से चमका प्रभुपंथ,
अगोले अलबेले हैं संत।
बनी दुनियां दीवानी भक्त,
साधना स्रोत, बहा कलधौत, मिली भवपोत,
शरण पाई सही सन्तन की।।

लयः आरती कुंज बिहारी

परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला कार्यक्रम

तीन पीढ़ियों का संगम स्थल होता है परिवार

मानसरोवर गार्डन।

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन में तेरापंथी सभा के तत्वावधान में परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला का कार्यक्रम आयोजित हुआ। पारिवारिक खुशहाली के टिप्स देते हुए साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा- परिवार तीन पीढ़ियों का संगम स्थल है।

परिवार बाल, जवान एवं वृद्धों से सुशोभित होता है। केवल ईंट, चूने व पत्थर से घर-परिवार का निर्माण नहीं होता है। यदि मकान इंसानियत की ईंट, चरित्र का चूना, सहयोग की सीमेंट एवं आत्मीयता की आरसीसी से बना है, वह मकान फिर घर बन जाता है। परिवार के हर व्यक्ति का फर्ज होता है कि वह अपनी सोच, स्वभाव, शब्द और व्यवहार से ऐसा आचरण करें जिससे परिवार में प्रेम घुला रहे एवं वह परिवार खुशी का शिवालय बन जाए। घर के बड़े बुजुर्गों की आंखें वैभव देखकर नहीं अपितु परिवार में प्रेम व एकता देखकर खुशी होती है।

साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने कहा जैसे बिना पानी के नदी व बिना पैसे के पर्स व्यर्थ है, वैसे ही बिना प्रेम के परिवार व्यर्थ सा ही लगता है। डॉ. साध्वी सुधाप्रभा जी ने कहा जिस प्रकार आकाश में सूरज, चाँद, सितारे सब कुछ होते हैं वैसे ही परिवार के कुछ सदस्य सूर्य की तरह तेजस्वी होते हैं, जो परिवार को तेजस्विता प्रदान करते हैं कुछ सदस्य चांद की तरह शीतलता का संचार करते हैं तो कुछ सदस्य तारों की तरह परिवार को रोशन करते हैं। साध्वी मैत्रीप्रभा जी ने संच संचालन करते हुए कहा घर से बाहर जाओ तो दिमाग लेकर जाना क्योंकि बाहर बाजार है किन्तु घर आओ तो दिमाग के साथ दिल जरूर लेकर आना, तभी परिवार में खुशहाली रहेगी। सभा अध्यक्ष नरेन्द्र पारख ने विचार रखे। मजु रांका एवं रेखा बोथरा ने सुमधुर मंगल संगान किया।

चातुर्मास है साधना और सिद्धि का अवसर

पालघर।

महातपस्वी आचार्यश्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी डॉ. पीयूषप्रभाजी ठाणा 4 का मंगल प्रवेश भव्य रैली के साथ हुआ। प्रवेश के पश्चात आयोजित स्वागत समारोह कार्यक्रम साध्वीश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र उच्चारण से प्रारंभ हुआ। ज्ञानशाला की प्रशिक्षिकाओं द्वारा मंगलाचारण किया गया। इस अवसर पर साध्वी पीयूषप्रभाजी ने कहा- चातुर्मास साधना सिद्धि का अवसर है। श्रावक समाज को ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप की विशेष आराधना करनी है। साध्वी भावनाश्रीजी ने कहा- चातुर्मास जीवन परिवर्तन और ज्ञान चेतना के विकास का उत्तम पर्व है। साध्वी दीप्तियशाजी ने कहा- श्रावक-श्राविकाएं खूब धर्माराधना करें।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महासभा कार्यकारीणी सदस्य व पालघर सभा प्रभारी दिलीप राठौड़, उपासक राजेन्द्र मुणोत, निर्मल जैन ने मंगल प्रवेश पर अपनी अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। सभाध्यक्ष चतुर तलेसरा ने स्वागत भाषण की प्रस्तुति दी। महिला मंडल अध्यक्ष संगीता चपलोत, तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष भावेश सिसोदिया, स्थानकवासी संघ अध्यक्ष हिम्मत परमार, नरेश राठौड़, देवीलाल सिंघवी आदि वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए।

ज्ञानशाला के बच्चों द्वारा स्वागत गीत का संगान किया गया। आभार ज्ञापन सभा मंत्री दिनेश राठोड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन संगीता बाफना ने किया।

पृष्ठ 2 का शेष

सदा धर्म में रमा रहे...

दक्षिण अफ्रीका के गबोन देश के राष्ट्रपति ब्राइस ओलिगुई नुगुएमा के संदेश का वाचन मुनि कुमारश्रमण जी ने किया। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने फरमाया कि संत के चरण अमृत की धारा होते हैं। आचार्यवर अध्यात्म की अमृतधारा लेकर सूरत आये हैं। सूरत का यह चातुर्मास एक विलक्षण चतुर्मास होगा। आचार्यवर डायमंड सिटी में सम्यक्त्व का डायमंड लेकर आए हैं। सम्यक्त्व का डायमंड जिस व्यक्ति को प्राप्त हो जाता है उसका जीवन सफल और सुफल हो जाता है। सूरत को स्मार्ट सिटी का दर्जा भी मिला हुआ है, आचार्य प्रवर इंटर्नल डिजिटलाइजेशन करवाने के लिए, भीतरी जगत से संपर्क करवाने पधारे हैं। सूरत क्लीन सिटी है, आचार्य वर चाहते हैं कि हर व्यक्ति आंतरिक दृष्टि से स्वच्छ बने। सूरत ग्रीन सिटी है, हरा-भरा है, आचार्य वर चाहते हैं कि हर व्यक्ति अध्यात्म से हरा भरा बने।

मुनि उदितकुमारजी ने पूज्यवर के स्वागत में कहा कि राजा वही बनता है जिसके पुण्य होता है, परम पूज्य आचार्य प्रवर पुण्य के अक्षय कोष हैं। पुराने संत कहा करते थे तेरापंथ का आचार्य वही बनता जिसको महाविदेह में जाना था पर थोड़ी कमी रह गई और वे तेरापंथ के आचार्य बन गए। आचार्य वर के चातुर्मास के संदर्भ में त्रिसूत्री कार्यक्रम का चिंतन किया था- अधिक से अधिक 12 व्रती श्रावक तैयार हों, मासखमण की तपस्या हो और एक साथ 2024 अठाइयां हो। पूज्यवर के स्वागत में आचार्य श्री महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष संजय सुराणा, स्वागत अध्यक्ष संजय जैन ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। सूरत महिला मंडल एवं कन्या मंडल ने स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। सिटीलाइट ज्ञानशाला की सुंदर प्रस्तुति हुई। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

करने में विवेक..

करने में विवेक और होने में समता होनी चाहिए।आज सिटी लाइट भवन में आये हैं, यहां आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने सन् 2003 का चतुर्मास किया था। भीतर गुरुदेव तुलसी का फोटो लगा है। चित्र से भी मन पर प्रभाव पड़ सकता है। गुरुदेव तुलसी तो महायात्री थे। गुरुदेव तुलसी ने अणुव्रत की बात बताई - आदमी अच्छा आदमी बने। भारत सरकार के राज्य मंत्री डा. एल मुरुगन आये हैं। राजनीति भी एक सेवा है, राजनीति में शुद्धता, नैतिकता, ईमानदारी बनी रहे। अलोभता से शुद्धता से आ सकती है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने कहा कि सिटी लाइट भवन आज भी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के आभावलय से प्रकंम्पित हो रहा है। कल्पवृक्ष, सूर्य और मेघ ये कभी नहीं कहते है कि हम किसी प्रकार उपकार नहीं करेंगे वैसे ही आचार्य प्रवर के पास अखूट खजाना है, जिसे वे लोगों में बांट रहे हैं। आचार्यवर तो महाकल्पवृक्ष, महासूर्य और महामेघ बनकर पधारे हैं। श्रद्धालु जन महाकल्पवृक्ष के समक्ष अपनी इच्छाओं की पूर्ति करें, महासूर्य से अन्तस के कमलों को विकसित करें, महामेघ से आत्मा का सिंचन करें। गत चातुर्मास सूरत में करने वाली साध्वी त्रिशलाकुमारीजी एवं साध्वी मधुबालाजी की सहवर्ती साध्वीजी ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की। साध्वीवृन्द ने मुमुक्ष रूप में महक मेहता, कल्प मेहता एवं सेजल भंडारी को श्री चरणों में भेंट स्वरूप निवेदन किया। पूज्यवर ने तीनों को मुमुक्षु रूप में साधना करने की आज्ञा प्रदान करवाई। संसदीय राज्य मंत्री डॉ. एल. मुरुगन ने अपनी भावना श्रीचरणों में अभिव्यक्त की।

व्यवस्था समिति के मुख्य ट्रस्टी बाबूलाल भोगर, स्थानीय सभा अध्यक्ष मुकेश बैद, तेयुप से अभिनन्दन गादिया, महिला मंडल से चन्दा भोगर, प्रिंयका श्रीश्रीमाल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। ज्ञानशाला प्रशिक्षक-प्रशिक्षिकाओं, कन्या मंडल एवं किशोर मंडल ने गीत की प्रस्तुति दी। मुमुक्षु कल्प मेहता एवं सेजल भंडारी ने भी अपनी भावना श्री चरणों में निवेदित की। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

संवर्धन कार्यशाला का आयोजन

कांदिवली। संवर्धन कार्यशाला में संभागी उपासक परिवार को संबोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा- महावीर का दर्शन आचार और व्यवहार में अवतरित होना चाहिए। हम सभी प्रकाश की यात्रा करने वाले हैं। उपासक श्रेणी हमारे धर्म संघ की कल्याणकारी श्रेणी है। धर्म आराधना में यह श्रेणी परम उपयोगी बन रही है। निष्ठा, पूर्ण दायित्व एवं समर्पण भाव से यह श्रेणी अपने समय और शक्ति का संयोजन कर रही है।

स्वाध्याय की दिशा में जितना विकास होगा, उतना नया ज्ञान प्राप्त किया जा सकेगा। ज्ञान के खजाने को बढ़ाने के लिए पुरुषार्थ की आवश्यकता है।

कार्यक्रम में उपासिका बहनों ने मंगलाचरण किया। उपासक श्रेणी संयोजक हस्तीमल डांगी ने अपने विचार रखे। साध्वी राजुलप्रभाजी ने उच्चारण शुद्धिकरण, साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने ध्यान विधि पर विचार रखे। संचालन साध्वी चैतन्यप्रभा जी ने किया।

संक्षिप्त खबर

धर्मसंघ की सुरक्षा और श्रीवृद्धि के लिए रहें सदा तत्पर

डोंबिवली। उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमारजी स्वामी के सान्निध्य में 'हमारा धर्मसंघ और हमारा दायित्व' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। मुनिश्री ने कहा कि संसार में अनेक संत हैं, पंथ हैं, ग्रंथ हैं, सबका अपना-अपना महत्व है, परन्तु हमारा धर्मसंघ शुद्ध आध्यात्मिक और अनुशासित धर्मसंघ है। आचार्य भिक्षु द्वारा संस्थापित यह संघ एक गुरु और एक विधान से विख्यात है। हमारा परम कर्त्तव्य है कि हम इस धर्मसंघ की सुरक्षा और श्रीवृद्धि के लिए सदा तत्पर रहें। संघ के एक-एक सदस्य को संभालते रहें। आज के लोग भौतिक प्रलोभनों के कारण इधर-उधर भटक रहे हैं। उनका आकर्षण ही ऐसा है कि उसमें फंसना आसान है, परन्तु उससे निकलना कठिन हो जाता है। हमें पूरी जागरुकता रखकर एक-एक सदस्य को संघीय संस्कार देने हैं। वर्ष में एक बार सपरिवार गुरु दर्शन एवं उपासना का लाभ भी लेना चाहिये, जिससे गुरुदेव की सेवा, उपासना, प्रवचन के साथ अनेक साधु-साध्वियों से सम्पर्क हो सके। कुछ तत्त्वज्ञान सीखा जाये जिससे हम अपने सिद्धांतों को समझ सकें और अपने जीवन व्यवहार में उनका उपयोग कर सकें। क्षेत्र में विराजित चारित्रात्माओं के दर्शन, सेवा, गोचरी का बराबर ध्यान रखना चाहिये ताकि बच्चों को भी सामायिक, पात्र दान आदि संस्कारों की जानकारी हो सके।

रक्तदान शिविर का आयोजन

विल्लुपुरम। अभातेयुप के निर्देशानुसार तेरापंथ युवक परिषद् विल्लुपुरम द्वारा मेगा ब्लड डोनेशन ड्राइव 'रिदम् 2024' का आयोजन स्थानीय आर्य व्यासा समुगम में किया गया। जिसमें 73 यूनिट्स ब्लड एकत्रित किए गए। इस रक्तदान कार्यक्रम के आयोजन में महासभा सदस्य राजेश सुराणा , सभा अध्यक्ष प्रेमचंद सुराणा, तेयुप अध्यक्ष विशाल बुरड, मंत्री पंकज सुराणा एवं सभी तेयुप सदस्य ने अपना श्रम नियोजित किया। कन्या मंडल, महिला मंडल ने भी रक्तदान किया। कार्यक्रम के प्रायोजक सुसवाणी सिल्वर्स, विल्लुपुरम रहे।

किशोर मंडल की नई टीम की घोषणा

दक्षिण, मुंबई। आचार्य महाप्रज्ञ पब्लिक स्कूल के आचार्य तुलसी सभागृह में दक्षिण मुंबई तेरापंथ किशोर मंडल की नई टीम का गठन हुआ। कार्यक्रम का प्रारंभ मंगलाचरण से हुआ। किशोर मंडल सयोजक हर्ष सिंघवी ने गत वर्ष में किशोर मंडल द्वारा हुई गतिविधियों एवं अपने अनुभवों का वर्णन किया। तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष नितेश धाकड़ ने किशोर मंडल द्वारा किए हुए कार्यों की अनुमोदना की। गणपत डागलिया ने किशोर मंडल के सदस्यों द्वारा गुरुदेव के पदार्पण के समय किए हुए प्रशंसनीय कार्यों से अवगत कराया। तेयुप अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया ने किशोर मंडल की नई टीम की घोषणा की, जिसमें संयोजक दिशान राज सिंघवी, सह संयोजक वंश राकेश श्रीश्रीमाल और अर्थ राठौड़ बने।

निःशुल्क दंत परीक्षण शिविर

राजाजीनगर। तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत गणाधिपति गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष में 14 दिवसीय निःशुल्क दंत परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया जिसमें कुल 60 सदस्यों ने लाभ लिया। सभी रक्त परीक्षण पर 28 प्रतिशत की विशेष छूट प्रदान की गई जिसके अंतर्गत 34 सदस्यों ने लाभ लिया एवं सम्पूर्ण शारीरिक जांच के विशेष हेल्थ पैकेज के अंतर्गत 14 सदस्यों ने लाभ लिया। इस प्रकार कुल 108 सदस्यों ने लाभ लिया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नामकरण संस्कार

■ **गंगाशहर।** बच्छराज बोथरा के सुपुत्र एवं पुत्रवधु सुशील कुमार-वर्षा बोथरा की नवजात पुत्री रत्न का नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से आयोजित हुआ। कार्यक्रम में जैन संस्कारक देवेन्द्र डागा और विपिन बोथरा ने विधि विधान पूर्वक कार्यक्रम करवाया।

■ **लिलुआ।** गंगाशहर बीकानेर निवासी– बेलूड़ प्रवासी डालचंद–संतोष देवी बोथरा के सुपुत्र सुनील–सपना बोथरा के पुत्र का नामकरण जैन संस्कार विधि से उनके निवास स्थान पर जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक अरुण नाहटा और मनीष डागा ने पूरे मंत्रोच्चार के साथ सम्पन्न करवाया। बालक का नाम नैतिक बोथरा रखा गया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **सूरत।** रावलिया कला निवासी सूरत प्रवासी भगवतीलाल बंब का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड़, धर्मचंद सामसुखा, हिम्मत बम्ब ने सम्पूर्ण विधि व मंगल मंत्रोच्चार से संपन्न करवाया।

नूतन कार्यालय शुभारंभ

■ **बेंगलुरु।** मुंबई प्रवासी जय राठौड़ का नूतन कार्यालय का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से कॉफीटेक कम्यूनिकेशन एचएसआर लेआउट बेंगलुरु में किया गया। तेयुप से धीरज कोठारी ने उपस्थित सभी को रोली एवं मोली से वर्धापित किया। परिषद् से जैन संस्कारक आदित्य मांडोत ने संस्कारक की भूमिका का निर्वहन करते हुए निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश

जीवन में होता रहे अध्यात्म का जागरण

मलाड़।

चातुर्मासिक मंगल प्रवेश के अवसर पर श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन द्वारा आयोजित स्वागत समारोह में उपस्थित श्रावक समाज को सम्बोधित करते हुए साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- आज मुझे अतिप्रसन्नता और आत्मतोष की अनुभूति हो रही है कि मैंने गुरु निर्देशानुसार चातुर्मासिक स्थल में प्रवेश कर लिया है। हम गौरवशाली हैं, हमें मर्यादित-अनुशासित, एक गुरु आज्ञा निर्दिष्ट धर्मसंघ प्राप्त हुआ है। हमारी श्रद्धा का एक मात्र केन्द्र हमारे गुरु हैं। गुरु कृपा से हमारा प्रवेश सानंद हो गया। जो श्रद्धा का पारावर हम देख रहे हैं, वह निरन्तर सभी में बढ़ता रहे।

साध्वीश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा- समस्त श्रावक समाज को इस चातुर्मास में ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप की यथासंभव आराधना करनी है। चातुर्मास का समय अध्यात्म जागरण का समय है। आज हमारा मंगल प्रवेश हुआ है- आवश्यकता है, सबका जीवन भी मंगल बने। डिजीटल डिटॉक्स रैली का यह संदेश है- तन, मन की कमजोरियों को दूर करें, गलत आदतों को हावी न होने दें। हमारे पास संयम की छत्री है, संकल्प बल है, गुरु की परम शक्ति है, जिससे अपने जीवन का सुखद निर्माण करें। गाड़ी चलाते वक्त, भोजन करते वक्त और रात्रि के 11 बजे से प्रातः 07 बजे तक मोबाईल का उपयोग न करें।

कार्यक्रम का शुभारम्भ साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी के महामंत्रोच्चार से हुआ। इस अवसर पर श्री तुलसी महाप्रज्ञ फाउण्डेशन के अध्यक्ष मेघराज धाकड़ ने स्वागत स्वर प्रस्तुत किये। मुंबई सभा अध्यक्ष माणकचंद धींग ने मुंबई की ओर से साध्वीश्री के सफल चातुर्मास की मंगलकामना की। विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने साध्वीश्री के सफल चातुर्मास की मंगलकामनाएं की।

साध्वी सुदर्शन प्रभा, साध्वी राजुलप्रभा और साध्वी शौर्यप्रभा ने 'मंगल मैजिक शो' के द्वारा चातुर्मास में करणीय कार्यों की अवगति दी। कन्या मंडल, कांदीवली ने 'पावरफुल दुर्गा का अवतरण' आकर्षक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। सभी क्षेत्रों की सभी संस्थाओं के पदस्थ व्यक्तियों ने समवेत स्वर में साध्वीवृन्द का भावभीना स्वागत कर परिषद का मन मोहा। ज्ञानशाला, कांदीवली द्वारा प्रस्तुत सुप्रीम कोर्ट ऑफ देवलोक का विशेष प्रोग्राम दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र रहा। 'त्याग आईसक्रीम पार्लर' के माध्यम से बच्चों ने आगन्तुकों को त्याग करने की हिदायत दी। संगीता इंटोदिया ने अपनी भावना व्यक्त की। तेयुप, महिला मंडल एवं कन्या मंडल, मलाड़, तेयुप एवं महिला मंडल, कांदीवली, ज्ञानशाला प्रशिक्षिकाओं आदि ने विभिन्न गीतों के साथ साध्वीवृन्द का स्वागत किया।

मुंबई तेरापंथ सभा मंत्री दिनेश सुतरिया ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुंबई तेरापंथ सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष दलपत बाबेल ने किया।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

तिरुपुर

तमिलनाडु के तिरुपुर शहर में अणुव्रत प्रवर्तक आचार्यश्री तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन दिवस' के रूप में मुनि दीपकुमार जी ठाणा-2 सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन में मनाया गया। मुनि दीपकुमार जी ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि आचार्य श्री तुलसी निर्माण के पुरोधा थे। उन्होंने साहित्य का निर्माण किया और साहित्यकारों का भी निर्माण किया। उनके अवदान आज वरदान बन रहे है। तेरापंथ के आचार्यों में सबसे अल्पायु में वे आचार्य बने। धर्म संघ में ज्ञान, ध्यान की सुर सुरिता प्रवाहित की। साधु-साध्वियों की शिक्षा पर ध्यान दिया और विशेष परिश्रम लगाया। आचार्य तुलसी के जीवन में संघर्ष बहुत आए, सबका साहस के साथ सामना किया। उन्होंने नारी जाति के उन्नयन के लिए रूढ़ि उन्मूलन का महान क्रांतिकारी कार्य किया। मुनि काव्यकुमार जी ने संचालन करते हुए कहा कि आचार्य श्री तुलसी का भाग्य प्रबल था और पुरुषार्थ में उनका गहरा विश्वास था। उन्होंने जो सोचा और कहां, वह करके दिखाया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अनिल आंचलिया, तेरापंथ महिला मंडल की बहनों, उपासिका मधु कोठारी, संतोष आंचलिया ने अपने विचारों और गीतिका से भावांजलि समर्पित की।

कीर्तिनगर, दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में कीर्तिनगर में गुरूदेव श्री तुलसी का 28 वां महाप्रयाण दिवस आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा-प्रतिभा, पुरुषार्थ एवं प्रेरणा के महादेवता थे आचार्य तुलसी। उनकी नवोन्मेशी प्रतिभा ने युगपटल पर दुर्लभ दस्तावेज लिखे। उनके प्रबल पुरुषार्थ ने तेरापंथ की धरती पर कर्तृत्व के नए पदचिन्ह अंकित किए। वे विशिष्ट विलक्षणताओं के महासंगम स्थल थे। उनकी विलक्षणताएं नैसर्गिक भी थी एवं अर्जित भी थी। मात्र बाईस वर्ष की वय में आचार्य बनकर उन्होंने तेरापंथ को विलक्षण बना दिया। प्रलम्ब शासनकाल में उन्होंने अनगिनत कीर्तिमान रचे। साध्वी कर्णिकाश्री ने मुक्तक के माध्यम से श्रद्धासुमन अर्पित किए। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने प्रभावक संच संचालन करते हुए कहा, आचार्य तुलसी महान स्वप्नदृष्टा एवं संकल्प के पुरोधा पुरुष थे। साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने कहा आचार्य तुलसी का टोलरेन्स पॉवर, उनका सिगिंग पावर, उनकी लीडरशिप बेजोड़ थी। साध्वी समत्वयशा जी ने भावपूर्ण गीत का सुमधुर संगान किया। दिल्ली सभा के पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल बैद, सभा उपाध्यक्ष विमल बैद, अभातेममं की उपाध्यक्ष सुमन नाहटा, मानसरोवर गाडेन सभाध्यक्ष नरेन्द्र पारख आदि ने अपने श्रद्धापूर्ण उद्गार व्यक्त किए। निर्मल फूलफगर ने मंगल संगान किया। कीर्तिनगर व मानसरोवर गार्डन के भाई-बहनों ने सुमधुर गीतिका संगान कर पूरी परिषद् को हर्ष विभोर कर दिया। त्रिनगर सभा के पदादिकारियों ने भी गीत का संगान किया।

उत्तर कोलकाता

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा -3 के सान्निध्य में अभातेममं के तत्त्वावधान में गणाधिपति गुरुदेव तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में तेरापंथ महिला मंडल मध्य कोलकाता द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें बृहत्तर कोलकाता की 12 शाखा मंडलों क्रमशः दक्षिण कोलकाता, दक्षिण हावड़ा, पूर्वांचल, उत्तर हावड़ा, मध्य कोलकाता, हिंद मोटर, टांलीगंज, बेहाला, लिलुआ, बाली-बेलूर, उत्तरपाडा, रिषड़ा ने अपनी सहभागिता दर्ज कर कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- आज के दिन 27 वर्ष पूर्व विश्वविख्यात राष्ट्रसंत आचार्य श्री तुलसी का महाप्रयाण हुआ था। वे साधना के शलाका पुरुष व शांति के पर्याय थे। उनका समग्र जीवन महकते गुलदस्ते की तरह था। उनका पवित्र जीवन, उदात्त चारित्र, पारदर्शी व्यक्तित्व हर किसी को अभिभूत कर देने में सक्षम था। वे व्यापक सोच व उदार दृष्टि कोण वाले जनप्रिय नेता थे। उन्होंने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर एक नई मिसाल पेश की। उनके चिंतन में चातुर्य, वाणी मे माधुर्य व प्रवचन में गांभीर्य था। उनके विकास के पांच सूत्र, विनय, विद्या, विवेक, विरति व विधायक विचार बहुत ही महत्त्वपूर्ण थे। मुनि जिनेशकुमार जी ने आगे कहा- आज आचार्य श्री तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में मना रहे हैं। प्रत्येक व्यक्ति को विसर्जन का महत्त्व समझना चाहिए। आचार्य श्री तुलसी ने पद विसर्जन कर समाज को अनासक्ति का अनमोल संदेश प्रदान किया है। इस अवसर पर मुनि परमानंदजी ने कहा - आचार्य श्री तुलसी महान व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने मानव को सही राह दिखाने का प्रयास किया। मुनि कुणालकुमारजी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ सभी महिला मंडलों द्वारा सामूहिक तुलसी अष्टकम् के संगान से हुआ। मंगलाचरण मध्य कोलकाता तेरापंथ महिला मंडल व कन्या मंडल द्वारा प्रस्तुत किया गया। स्वागत भाषण अध्यक्षा संतोष बैद ने दिया। विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपने विचार व्यक्त किए। लिलुआ, बेहाला, टांलीगंज महिला मंडल ने अपनी प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन मंत्री मंजु बरड़िया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

बालोतरा

औद्योगिक नगरी के लघु उद्योग भवन में तेरापंथी सभा द्वारा पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस साध्वी रतिप्रभाजी, साध्वी मंगलयशाजी, साध्वी सम्पूर्णयशाजी ठाणा 13 के सान्निध्य में मनाया गया। साध्वीश्री द्वारा महामंत्र का उच्चारण किया। इस महाप्रयाण दिवस को विसर्जन दिन के रूप में मनाते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। कन्या मंडल द्वारा गीत से मंगलाचरण किया गया। साध्वी रतिप्रभाजी ने कहा आचार्यश्री तुलसी मानव धर्म के प्रवर्तक थे, उन्होंने दुर्भावों का, इच्छाओं का, मोह का विसर्जन कर अपने साथ जन-जन का विकास किया। उनका सम्पूर्ण जीवन अमृतमय था, उस अमृतमय वाणी से सभी का जीवन बदल जाता था। उन्होंने नारी जाति के उत्थान व उनके विकास के लिए कई कार्य किए, कई रूढ़ियों का प्रतिकार कर उन्हें समाप्त करने का कार्य किया। साध्वी मंगलयशाजी ने कहा गुरुदेव तुलसी ने बताया कि स्वार्थ की चेतना का विसर्जन कर जीवन को जीना। आचार्य श्री तुलसी ने अपने जीवन में ऐसे कई विसर्जन किए जिसमें महत्वपूर्ण है आपने अपने आचार्य पद का विसर्जन कर अपनी विद्यमानता में अपने उतराधिकारी को आचार्य पद प्रदान किया। साध्वी सम्पूर्णयशाजी ने कहा आचार्य श्री तुलसी एक दिव्य पुरुष थे। उनकी बाल्य अवस्था में संयम की भावना हुई और 11वर्ष की आयु में दीक्षा ले ली। आपकी बुदिमता आपका विलक्षण चिंतन व आपकी योग्यता देख आचार्य श्री कालूगणी ने अपना उतराधिकारी बनाया और आप मात्र 22वर्ष में तेरापंथ धर्म संघ के नवम आचार्य बने आपने मानव को मानव बनाने का काम किया। साध्वी कलाप्रभाजी ने कहा आचार्यश्री तुलसी एक विलक्षण महामानव थे जिन्होंने कितनों-कितनों का निर्माण किया। आपका चिंतन, निर्णय एवं कर्तृत्व बेजोड़ था। आपने भावी समय को देखते हुए नए-नए कार्य योजना बनाई जिसका कईयों ने विरोध किया पर आपने उनको विनोद के रूप में लेकर साहसी कार्य किया। साध्वीवृंद की ओर से 'एक संवाद तुलसी की पीएचडी पर' रोचक प्रस्तुति की गई। तेरापंथ सभा अध्यक्ष महेन्द्र वैद, सिवांची मालानी संस्था अध्यक्ष शांतिलाल डागा, तेयुप अध्यक्ष रौनक श्रीमाल, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संखलेचा, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष कमलादेवी ओस्तवाल, सेजल भंडारी आदि ने अपने भावों से श्रद्धांजलि प्रदान की। महिला मंडल सदस्यों व सभा तेयुप स्वर संगम द्वारा गीत से श्रद्धांजलि दी। ज्ञानशाला के छोटे-छोटे बच्चों के द्वारा उपकारी गुरु तुलसी के प्रति श्रद्धा भावों की प्रस्तुति दी। आभार सभा मंत्री प्रकाश वैद ने किया। कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी मौलिकप्रभाजी ने किया।

सरदारपुरा

अभातेममं के तत्वाधान में गुरुदेव श्री तुलसी का महाप्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में साध्वी प्रमोदश्रीजी ठाणा-5 के सान्निध्य में अमरनगर जीरावला हाउस में मनाया गया। कार्यक्रम का प्रारंभ साध्वीश्री ने नमस्कार महामंत्र से किया। तत्पश्चात् महिला मंडल द्वारा तुलसी अष्टकम् के द्वारा मंगलाचरण किया। साध्वी प्रमोदश्रीजी ने कहा कि आचार्य तुलसी भारतीय संस्कृति के उज्वल नक्षत्र थे, मानवता के सजग प्रहरी थे। 21वें सदी के मनस्वी, यशस्वी, ओजस्वी और तेजस्वी आचार्य थे। आप ऐसे सूरज थे जो जन-जन को प्रकाश बाँटते थे। आप ऐसे शंकर थे जो खुले हाथों अमृत बांटते थे। आप ऐसे महापुरुष थे जो जाति, वर्ग, लिंग, भेद भाव की सीमा से ऊपर उठकर संसार को सन्मार्ग दिखाते थे। आप प्रेरणापुंज थे जिन्होंने ने अपनी आत्मशक्ति से अनेकों की दृष्टि दी, गतिहीनों को पंख दिए और धर्म को नई पहचान दी। इससे पूर्व सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला ने स्वागत भाषण दिया। महिला मंडल अध्यक्ष दिलख़ुश तातेड़ ने आचार्य तुलसी के विसर्जन पर प्रकाश डाला। अमिता बैद ने गुरुदेव तुलसी के अवदानों पर अपने विचार व्यक्त किया। ज्ञानशाला संयोजिका अर्चना बुरड, कन्या मंडल संयोजिका कनिका बाफ़ना, अणुव्रत समिति संयोजिका सुधा भंसाली, तेयुप मंत्री देवीचन्द तातेड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी पार्श्वप्रभाजी एवं साध्वी विजयप्रभाजी ने आचार्यश्री तुलसी के अवदानों की जानकारी देते हुए अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन संतोष मेहता ने व आभार ज्ञापन जया जीरावला ने किया।

शिवकासी

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला-मडंल निर्देशानुसार शिवकासी महिला मंडल द्वारा विसर्जन दिवस कार्यशाला का आयोजन किया गया। 'मौलिकता रहे सुरक्षित परिवर्तन सदा अपेक्षित' कार्यक्रम का शुभारंभ महिला मंडल द्वारा नमस्कार महामंत्र, तुलसी अष्टकम और प्रेरणा गीत से हुआ। उपस्थित बहनों ने गुरुदेव तुलसी के प्रति अपनी श्रद्धा अभिव्यक्ति दी। गुरुदेव तुलसी ने खुली आंखों से सपने देखे और उन्हें साकार भी कर दिखाया एवं संघ को एक नई ऊंचाई प्रदान की। महिला मंडल की बहनों ने मिलकर गुरुदेव तुलसी का जाप किया और सभी ने त्याग प्रत्याख्यान भी किए।

टिटिलागढ़

अभातेममं के निर्देशानुसार टिटिलागढ़ महिला मंडल ने गुरुदेव श्री तुलसी के 28वां महाप्रयाण दिवस को विसर्जन दिवस के रूप में बहुत ही उत्साह के साथ मनाया। कार्यक्रम का प्रारंभ स्नेहा जैन एवं पूजा जैन के तुलसी अष्टकम् के संगान के साथ हुआ। अध्यक्ष बॉबी जैन ने सभी का स्वागत किया। महिला मंडल ने प्रेरणा गीत का संगान एवं गुरुदेव से तुलसी की स्मृति में 2 मिनट का जाप किया। नगर पालिका अध्यक्ष ममता जैन ने नारी को घुंघट से निकाल कर हर क्षेत्र में आगे बढ़ाने के लिए गुरुदेव श्री तुलसी को श्रद्धा सुमन अर्पित किया। तत्पश्चात 'मौलिकता रहे सुरक्षित परिवर्तन सदा अपेक्षित' विषय पर भाषण प्रतियोगिता की शुरुआत की गई जिसमें 8 बहनों ने भाग लिया। विधायक नवीन जैन ने प्रतियोगिता में भाग लेने वाली सभी बहनों को पुरस्कृत किया। 15 बहनों ने चार प्रकार के त्याग का संकल्प लिया। सुंदरी जैन एवं संतोष जैन ने अपनी सुमधुर गीतिका प्रस्तुत की। नवनिर्वाचित विधायक नवीन जैन को स्थानीय सभा एवं महिला मंडल के द्वारा सम्मानित किया गया । महिला मंडल की मंत्री दीपिका जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया और सभी का आभार व्यक्त किया।

गणाधिपति पूज्य गुरुदेव आचार्यश्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस पर विविध आयोजन

काँटाबांजी

अभातेममं के निर्देशानुसार कांटाबांजी तेरापंथ महिला मंडल द्वारा 'विसर्जन दिवस' समणी निर्देशिका जिनप्रज्ञा जी और समणी क्षांतिप्रज्ञा जी के सानिध्य में स्थानीय तेरापंथ भवन में मनाया गया। महिला मंडल द्वारा तुलसी अष्टकम् से मंगलाचरण किया गया। तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष संजय जैन ने आचार्य तुलसी पर सुमधुर गीत का संगान किया।

महिला मण्डल ने विसर्जन गीत का संगान किया। समणी जिनप्रज्ञाजी ने कहा- गुरुदेव तुलसी ने तेरापंथ धर्मसंघ को नई ऊंचाईयां दी। प्रेक्षाध्यान, अणुव्रत आदि जैन-धर्म के मौलिक तत्व को नव कलेवर प्रदान किया, जिससे सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण हुआ। जैन-धर्म के मौलिकता को अक्षुण्ण रखते हुए तुलसी-महाप्रज्ञ युग ने नव-नव आयाम दिए। भाषण प्रतियोगिता में महिला मंडल की बहनों के साथ तेरापंथ सभा एवं तेयुप सदस्यों ने भी बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। भाषण प्रतियोगिता के विजेता – प्रथम - स्मिता जैन और रितु जैन, द्वितीय - मनीषा जैन, तृतीय - सुमित जैन को पुरस्कृत किया गया। महिला मंडल से पूजा जैन ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन सचिव रितु जैन ने किया।

राउरकेला

अभातेममं द्वारा निर्देशित गुरुदेव श्री तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस को विसर्जन दिवस के रूप में तेरापंथ महिला मंडल राउरकेला ने तेरापंथ भवन में मनाया। कार्यक्रम की शुरुआत तुलसी अष्टकम् से की गई। महिला मंडल द्वारा सामूहिक जाप किया गया। अध्यक्ष तरुलता जैन ने गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी के अवदानों के बारे में व्याख्या की एवं उपस्थित सभी का स्वागत किया। 'मौलिकता रहे सुरक्षित, परिवर्तन सदा अपेक्षित' विषय पर संगीता दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन कोमल डोशी ने किया। आभार ज्ञापन मोनिका बोथरा ने किया।

इरोड

अभातेममं द्वारा निर्देशित गुरुदेव श्री तुलसी के 28 वें महाप्रयाण दिवस को तेरापंथ महिला मंडल इरोड द्वारा विसर्जन दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तुलसी अष्टकम से की गई। अध्यक्षा पिंकी भंसाली ने सभी का स्वागत किया। मंडल की बहनों ने आचार्य तुलसी को गीत के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की और अवदानों की नवीन विधा से प्रस्तुति दी।

'मौलिकता रहे सुरक्षित, परिवर्तन सदा अपेक्षित' विषय पर अनेक वक्ताओं ने अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम के अंतिम चरण में जप में भाई बहनों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन मंजू देवी बोथरा ने किया। मंत्री पूनम दुगड़ द्वारा आभार ज्ञापन किया गया।

मलाड़, मुंबई

आचार्य श्री तुलसी के महाप्रयाण दिवस के अवसर पर साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञा जी ने कहा कि आचार्य श्री तुलसी व्यक्ति नहीं, विचार थे, संस्कृति नहीं, संस्कारों का बीजारोपण करने वाले संस्कारक थे। उनके अमृतवाणी उपदेश शताब्दियों तक हमें प्रेरणा प्रदान करते रहेगा। अपने उदारमना व्यक्तित्व एवं जनोत्थान की चेतना के कारण वे जन-जन के प्रणम्य बन गए। राजनीति के क्षेत्र में भी गुरुदेव तुलसी के आयामों का विशेष सम्मान किया गया। समण श्रेणी के रूप में हुई देश-विदेश की यात्रा का उल्लेख करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि तेरापंथ जैन धर्म का पर्याय बन गया है। जब जैन विश्व भारती यूनिवर्सिटी की स्थापना हुई उस समय चारूकीर्ति भट्टारक ने कहा - आचार्य श्री तुलसी ने नालंदा और तक्षशिला के रूप में जैन समाज को शिक्षा संस्थान प्रदान किया है। आगम संपादन का कार्य कर संघ को समृद्ध बनाया। साध्वी वृंद ने सामूहिक भक्तिमय गीत की प्रस्तुति दी। तेरापंथ युवक परिषद एवं महिला मंडल ने भी गीत का संगान किया।

नवरंगपुर

अभातेममं के निर्देशानुसार नवरंगपुर महिला मंडल द्वारा गुरुदेव श्री तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस विसर्जन दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तुलसी अष्टकम से किया गया। तारा देवी सुराणा ने सभी का स्वागत किया। बिंदिया जैन ने सुंदर गीतिका का संगान किया।

सभी बहनों द्वारा 10 मिनट का सामूहिक जप किया गया। तत्पश्चात 'मौलिकता रहे सुरक्षित, परिवर्तन सदा अपेक्षित' विषय पर मंडल की बहनों ने अपने विचार व्यक्त किये। अध्यक्ष बॉबी जैन ने गुरुदेव तुलसी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करते हुऐ कहा आचार्य बनते ही आपने साध्वी गण का विकास किया। रूढ़िवाद, अंधविश्वास, दहेज प्रथा, बाल विवाह, जात-पात जैसे नकारात्मक प्रथाओं को दूर कर सुव्यवस्थित मर्यादाओं को समझाया। अंत मे रीना जैन ने सभी का आभार व्यक्त किया।

इचलकरंजी

गुरुदेव तुलसी का 28वां महाप्रयाण दिवस 'विसर्जन दिवस' के रूप में तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। नमस्कार महामंत्र द्वारा कार्यक्रम की शुरुआत हुई। बहनों ने तुलसी अष्टकम व जप से वातावरण को मंगलमय बना दिया। उपाध्यक्ष सपना बालड़ ने सभी का स्वागत किया। अभातेममं कार्यकारिणी सदस्य जयश्री जोगड़ ने कषायों के विसर्जन और ममत्व के बारे में अपने विचार व्यक्त किए।

जसोल

अभातेममं के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल जसोल द्वारा 'विसर्जन दिवस' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ। नवयुवती बहनों द्वारा 'तुलसी अष्टकम' से मंगलाचरण किया गया। मंडल अध्यक्ष कंचन देवी ढ़ेलडिया ने स्वागत भाषण देते हुए गुरुदेव तुलसी को याद करते हुए 'विसर्जन' महत्व बताया और बहनों को विसर्जन की प्रेरणा दी। उपासिका मोहनी देवी संकलेचा ने सामूहिक जप का प्रयोग करवाया। 'मौलिकता रहे सुरक्षित, परिवर्तन सदा अपेक्षित' विषय पर भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। निर्णायक की भूमिका बालोतरा नवकार विद्या मंदिर स्कूल के उपाचार्य अमृतलाल बुरड़ व सभा मंत्री धनपत संकलेचा ने निभाई। प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर पुष्पा बुरड़, द्वितीय स्थान पर कंचन देवी ढेलडिया व तृतीय स्थान उपासिका मोहनी देवी संकलेचा ने प्राप्त किया। पूर्व सरपंच भंवरलाल भंसाली ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा की तुलसी जैसे महान संत विरले ही होते है जो स्वयं का ही उद्धार नही करते, बल्कि पूरी मानव जाति का उद्धार करते हैं। आभार ज्ञापन पूर्व अध्यक्ष पुष्पादेवी बुरड़ ने किया एवं कार्यक्रम का सफल संचालन उपाध्यक्ष सरोज भंसाली ने किया।

शाहदरा, दिल्ली

साध्वी संगीतश्रीजी के सान्निध्य में ओसवाल भवन में आचार्य तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस पर भावांजलि कार्यक्रम आयोजित किया गया। साध्वीवृंद के मंगल गीत से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। साध्वीश्री ने कहा- आचार्यश्री तुलसी का संन्यास ज्ञानमयी गंगा, भक्तिमयी जमुना व कर्ममयी सरस्वती का संगम स्थल था। आचार्यश्री तुलसी ने तेरापंथ धर्म संघ में अनेकानेक अवदान दिए। पदलिप्सा के युग में आचार्य पद का विसर्जन कर एक अविस्मरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। आचार्यश्री तुलसी ऊर्जा के भंडार थे। तुलसी के नाम में चमत्कार है- 'तु' यानि तुम्हारा, 'ल' यानि लक्ष्य, 'सी' यानि सिद्ध, तुम्हारा लक्ष्य सिद्ध हो। साध्वी शांतिप्रभाजी एवं साध्वी कमलविभाजी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। भावांजलि के क्रम मे दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष रणजीत भंसाली, शाहदरा सभा के अध्यक्ष राजेन्द्र सिंघी, ओसवाल भवन के अध्यक्ष आनंद बुच्चा, तेयुप व महिला मंडल पदाधिकारी गण आदि ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। पूर्वी दिल्ली महिला मंडल की बहनों ने एवम युवक परिषद् दिल्ली के युवकों ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। कमलाबाई मणोत ने गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुदिताश्रीजी ने किया।

देह, दिमाग, दिल की शुद्धि से जीवन बनता है पवित्र

चेन्नई।

हमारे जीवन में तीन प्रकार की शुद्धि होनी चाहिए- देह, दिमाग और दिल। इनकी शुद्धि से जीवन में आनन्द का वास होता है, पवित्रता बढ़ती है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का वास होता हैं- उपरोक्त विचार महावीर जैन भवन, ट्रिप्लीकेन, चेन्नई में धर्म परिषद को सम्बोधित करते हुए मुनि हिमांशुकुमारजी ने कहें। मुनिश्री ने कहा कि जैनागमों में निर्जरा के बारह प्रकार बताए गए हैं, इनकी साधना से तन, मन और भावों की शुद्धि होती है। देह की शुद्धि के लिए तप का सहारा लिया जाना चाहिए।

तप से अनेकानेक लाइलाज बीमारियां भी दूर हो सकती हैं। वर्तमान में डॉक्टर भी कहते हैं कि जलन, ऐसिडिटी, कब्ज इत्यादि होने पर रात्रि भोजन छोड़ना चाहिए। चातुर्मास के समय में तपस्या की विशेष साधना करनी चाहिए। अतः तप से देह की शुद्धि हो सकती है। मुनिश्री ने आगे कहा कि दिमाग को नकारात्मकता रूपी कचरे से बचाना चाहिए। उसके लिए सत् साहित्य पढ़ना और वीतराग पथ के पथिक साधु-संतों का प्रवचन श्रवण करना चाहिए। तीसरे बिन्दु दिल की शुद्धि के लिए सत्संग करने, श्रद्धा भाव से संत महात्माओं की सेवा उपासना करने का आह्वान किया।

मुनि हेमंतकुमारजी ने कहा कि डिमाण्ड होने पर जैसे प्राप्त वस्तु प्रिय लगती है, सुखद अनुभूति कराती है, उसी तरह ज्ञान पिपासु के लिए जिन वाणी सुखद अहसास कराती है। हमारा शरीर नौका, आत्मा नाविक और यह संसार समुद्र के समान है। संसार रुपी समुद्र से पार पाने, मोक्षगामी बनने के लिए जिस प्रकार प्लेन, रेल यात्रा उनसे बिना आसक्ति से सम्पन्न करते है, उसी तरह हमें हमारे शरीर पर भी आसक्त नहीं रहना चाहिए।

निर्माण : बढ़ते कदम विकास की ओर

हैदराबाद। अभातेममं के निर्देशन में "निर्माणः बढ़ते कदम विकास की ओर (विद्यालय संरक्षण)" के अंतर्गत स्थानीय तेरापंथ महिला मंडल ने सिकंदराबाद स्थित टैगोर होम्स इंस्टीट्यूट सेकेंडरी स्कूल में स्कूल बेंच रिपेयरिंग का कार्य करवाया।

पांचवी और छठी क्लास के बच्चों की सार संभाल की। सर्वप्रथम बच्चों तथा मंडल द्वारा अणुव्रत गीत का संगान किया गया। सभी बच्चों ने पूरा अणुव्रत गीत स्पष्ट उच्चारण के साथ गाया। स्कूल की प्रिंसिपल ने सबका स्वागत किया।

संबोधि

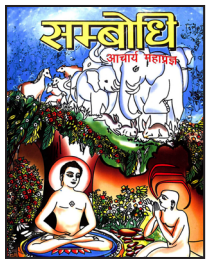

गृहस्थ-धर्म प्रबोधन

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

९. योग्यताभेदतो भेदो, धर्मस्याधिकृतो मया।
एक एवान्यथा धर्मः, स्वरूपेण न भिद्यते॥

योग्यता में तारतम्य होने के कारण मैंने धर्म के भेद का निरूपण किया है। स्वरूप की दृष्टि से वह एक है। उसका कोई विभाग नहीं होता।

१०. महाव्रतात्मको धर्मोऽनगाराणां च जायते।
अणुव्रतात्मको धर्मो, जायते गृहमेधिनाम्।।

अनगार के लिए महाव्रत रूप धर्म और गृहस्थ के लिए अणुव्रत रूप धर्म का विधान किया गया है।

सम्यग् दर्शन, सम्यग् ज्ञान और सम्यग् चारित्र (आचरण) धर्म है। जिसकी दृष्टि सम्यग् हो गई, पर-पदार्थों या मान्यताओं से जो घिरा नहीं है, वह सम्यग् द्रष्टा होता है। सम्यग् ज्ञान भी वहीं होता है और सम्यग् चारित्र की योग्यता भी वहीं होती है। विभाजन योग्यता के आधार पर है। श्रमण और गृहस्थ-दोनों की गति एक ही दिशा की ओर है। किन्तु गति का अंतर है। एक की यात्रा 'जेट विमान' पर होती है और दूसरे की यात्रा 'कार' या 'साइकिल' पर होती है। पहुंचते दोनों है पर पहुंचने के समय में अंतर हो जाता है। महाव्रत की यात्रा जेट विमान की यात्रा है। महाव्रती का मुख संसार से उदासीन होता है और परमात्मा के सम्मुख। बस, वह एकमात्र आत्मा को धुरी मानकर अनवरत उसी दिशा में बढ़ता रहता है। उसकी दृष्टि इधर-उधर नहीं जाती और जाती भी है तो तत्काल वह अपने ध्येय पर उसे पुनः ले आता है। श्रमण होकर फिर जो अपने ध्येय-आत्मदर्शन में अप्रवृत्त रहता है तो समझना चाहिए श्रामण्य केवल बाहर से आया है, भीतर से उत्पन्न नहीं हुआ। गृहस्थ के और उसके जीवन में वेष के अतिरिक्त विशेष अंतर नहीं रहता।

गृहस्थ अनासक्ति और आसक्ति के मध्य गति करता रहता है। वह सर्वथा इन्द्रिय और मन के अनुराग से मुक्त नहीं हुआ है। उसके पैर दोनों दिशाओं में चलते हैं। लेकिन वह जानता है कि मंजिल यह नहीं है। उसे ममत्व से मुक्त होना है। इसलिए वह स्थूल से सूक्ष्म, दृश्य से अदृश्य और भ्रांति से सत्य की तरफ सचेष्ट रहता है।

अनावश्यक वस्तुओं का संग्रह यह व्यक्त करता है कि व्यक्ति भीतर में आसक्त है। आसक्ति के टूटने पर वस्तुओं का संग्रह हो, यह अपेक्षित-सा नहीं लगता। उसके पीछे कोई अन्य कारण हो तो भिन्न बात है। त्याग वही कर सकता है जो आसक्ति से मुक्त है। आसक्त व्यक्ति छोड़कर भी बहुत इकट्ठा कर लेता है।

सामान्य व्यक्ति वस्तुओं को पकड़ते हैं और उन पर राग-द्वेष का आरोपण करते हैं, किन्तु राग-द्वेष पर प्रहार नहीं करते। जब कि मूल है-राग-द्वेष। धर्म की मूल साधना है-समता, राग-द्वेष-मुक्त प्रवृत्ति। यदि धार्मिकों का जीवन राग-द्वेष से मुक्त होता तो निःसंदेह यत् किंचित् मात्रा में सफलता मिलती। लकीर को पीटने से सांप नहीं मरता।

महावीर ने कहा है–परिग्रह–मूर्च्छा आसक्ति है। आसक्ति का त्याग न कर, केवल जिसने घर को छोड़ दिया, वह न मुनि है और न गृहस्थ। कबीर ने कहा है–'आसन मारके बैठा रे योगी आशा न मारी जोगी' योगी आसन जमा कर बैठा है किन्तु आशा–आकांक्षा को नहीं मारा।

वस्तुओं का संग्रह आसक्ति से होता है। आसक्त व्यक्ति बाहर से स्वयं को भरने का यत्न करता है। अनासक्त भीतर के रस से आप्लावित होता है। वह बाहर से भरने में कोई सार नहीं देखता। वस्तुओं के प्रति उसके मन में कोई आकर्षण नहीं रहता। वह देखता है-पदार्थ पदार्थ हैं। इनकी उपयोगिता बाहर के लिए है, भीतर के लिए नहीं। ध्रुवीय प्रदेशों में एक एस्किमों परिवार है। धार्मिकों को भी उनसे बहुत कुछ सीखने जैसा है। एक फ्रेंच यात्री पहली बार गया। उसने लिखा है-मैंने उनसे ज्यादा सम्पन्न व्यक्ति नहीं देखे।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

ध्यान की व्यूह-रचना

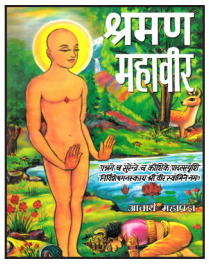

भगवान् का शरीर निर्वस्त्र है। वे आत्मबल और योगबल से उस सर्दी में अप्रकम्प खड़े हैं। उसी समय वहां एक व्यन्तरी आयी। उसका नाम था कटपूतना। भगवान् को देखते ही उसका क्रोध उभर गया। उसने एक परिव्राजिका का रूप धारण किया। बिखरी हुई जटा में जल भरकर उसे भगवान् पर फेंका। भगवान् इस घटना से विचलित नहीं हुए। इस समय भगवान् को लोकावधि (लोकवर्ती समस्त मूर्त द्रव्यों को जानने वाला अतीन्द्रिय) ज्ञान उपलब्ध हुआ।

भगवान् महावीर 'अवबाधगति से अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहे हैं। उनका पंथ अबाध नहीं है। इस द्वन्द्व की दुनिया में क्या किसी का भी पथ अबाध होता है? जिसकी मंजिल लम्बी है, उसे कहीं समतल मिलता है, कहीं गड्ढे और कहीं पहाड़। पर जिसके पैर मजबूत होते हैं, उसकी गति बाधित नहीं होती। वह उन सबको पार कर जाता है।

साधना के आठवें वर्ष में एक बार संस्कारों ने भयंकर तूफान का रूप धारण कर लिया। यह घटना उस समय की है। जब भगवान् बहुसालक गांव के शालवन उद्यान में ध्यान कर रहे थे। भगवान की जागरूकता से वह तूफान थोड़े में ही शांत हो गया।

साधना के ग्वारहवें वर्ष में संस्कारों ने फिर भयंकर आक्रमण किया। यह उनका अन्तिम प्रयत्न था। भगवान संस्कारों पर तीव्र प्रहार कर रहे थे। इसलिए उन्होंने भी अपनी सुरक्षा में सारी शक्ति लगा दी।

पेढाल गांव। पेढाल उद्यान। पोलास चैत्य। तीन दिन का उपवास। भगवान शिलापट्ट पर कुछ आगे की ओर झुककर खड़े हैं। कायोत्सर्ग की मुद्रा है। ध्यान की लीनता बढ़ रही है। दोनों हाथ घुटनों को छू रहे हैं। आखें लक्ष्य पर केन्द्रित हैं। रात्रि की वेला है। चारों ओर अंधकार का प्रभुत्व है।

भगवान् को अनुभव हो रहा है कि प्रलयकाल उपस्थित है। धूलि की भीषण वृष्टि हो रही है। शरीर का हर अवयव उससे भर रहा है, दब रहा है। भगवान् घबराये नहीं। धूलि की वर्षा शान्त हो रही है और तीक्ष्ण मुंह वाली चींटियां शरीर को काट रही हैं। भगवान् फिर भी शांत हैं।

चींटियां अपना काम पूरा कर जा रही हैं और मच्छरों की आंधी आ रही है। उनका दंश इतना तीक्ष्ण है कि स्थान-स्थान पर लहू के फव्वारे छूट रहे हैं।

मच्छर गए। दीमकों का दल-बादल आया। वह गया तो बिच्छुओं की भीड़ उमड़ पड़ी। वह बिखरी, फिर आए नेवले, फिर सांप, फिर चूहे, फिर हाथी और फिर बाघ। पिशाच फिर क्यों पीछे रहते? सब बड़ी तेजी के साथ आए और जैसे आए, वैसे ही विफल होकर चले गए।

संस्कारों ने अकस्मात् अपनी गति बदली। क्रूरता ने करुणा की चादर ओढ़ ली। एक ही क्षण में भगवान् के सामने त्रिशला और सिद्धार्थ उपस्थित हो गए। वे करुण स्वर में बोले, 'कुमार! इस बुढ़ापे में हमें छोड़कर तुम कहां आ गए? चलो, एक बार फिर अपने घर की ओर। देखो, तुम्हारे बिना हमारी कैसी दयनीय दशा हो गयी है? उन्होंने करुणा के तीखे–तीखे बाण फेंके फिर भी भगवान् का मन विंध नहीं पाया।

त्रिशला और सिद्धार्थ जैसे ही उस रंगमंच से ओझल हुए, वैसे ही एक अप्सरा वहां उपस्थित हो गई। उसके मोहक हाव-भाव, विलास और विभ्रम जल-ऊर्मी की भांति वातावरण में हल्का-सा प्रकंपन पैदा कर रहे थे। उसकी मंथर गति और मंद-मृदु मुस्कान वायुमण्डल में मादकता भर रही थी। उसके नेउर में घुंघरू बरबस सबका ध्यान अपनी ओर खींच रहे थे। किन्तु भगवान् पर उसके जादू का कोई प्रभाव नहीं हुआ।

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

-आचार्यश्री महाश्रमण

विनम्रता का प्रयोग

(पिछला शेष)

लोकोपचार विनय

लोकोपचार विनय के सात प्रकार हैं-

अभ्यासवर्तिता (गुरु आदि के समीप रहना),

परच्छन्दानुवर्तिता (आराध्य के अभिप्राय के अनुकूल वर्तन), कार्य हेतु (ज्ञान आदि के लिए भोजन आदि देना), कृत प्रति कृतिता (विनय से प्रसन्न किए गए गुरु श्रुत देंगे इस भावना से भोजन आदि देना), आर्त्तगवेषण (ग्लान को भैषज्य आदि से लाभान्वित करना), देशकालज्ञता (अवसरोचित कार्य सम्पादन करना), सर्वार्थ अप्रतिलोमता (आराध्य संबंधी सभी प्रयोजनों में अनुकूल रहना)।

विनय की अनेक परिभाषाएं मिलती हैं- आशातना न करना, न कराना और बहुमान करना विनय है। जिससे कर्म का शीघ्र विनयन (नाश) होता है, वह विनय है।

स्वार्थ-विलय का प्रयोग

विनम्रता की प्रतिमूर्ति और सेवाभावी सन्त खेतसी ने अपने परम श्रद्धेय गुरुदेव आचार्य भिक्षु से कहा- 'कल रात्रि में आपको लघुशंका के लिए बहुत उठना पड़ा, बहुत परिश्रम हुआ ! स्वामीजी (श्री भिक्षु) ने इस कथन को गम्भीरता से ले लिया। उन्हें लगा कि इसे रात को बहुत बार जगाना पड़ा था, इसीलिए यह ऐसा कह रहा है। उन्होंने कहा- 'हां, रात को मुझे तो तकलीफ थी ही, पर साथ-साथ तुम्हें भी बार-बार उठाने से तकलीफ हुई। आज रात को भी पता नहीं स्वास्थ्य की कैसी स्थिति रहे, परन्तु आज रात को तुझे जगाने का त्याग है।'

स्वामीजी के इस अप्रत्याशित निर्णय ने मुनि खेतसी को एकदम चकित कर दिया। वे कहने लगे- 'यह आपने क्या किया? मैंने अपने जागरण के कष्ट से घबराकर आपसे यह निवेदन थोड़े ही किया था? खैर ! आपको जगाने का त्याग है तो मुझे आज रात में सोने का ही त्याग है।' वे सारी रात जाग कर स्वामीजी की सेवा करते रहे।

'शासन समुद्र' से उद्धृत यह घटना, जो कि श्रुतानुश्रुत चलती आई है, गुरुभक्ति व सेवाभावना का अनुकरणीय उदाहरण है। सेवा के क्षेत्र में आगे बढ़ने वालों के लिए बोधपाठ है। इस घटना अथवा बात से शिष्यों को गुरु-सेवा की शिक्षा मिलती है।

एक बात और, जो मैंने स्थविर मुनिवर से सुनी है तथा जिस रूप में स्मृति पटल में है, उल्लिखित कर रहा हूं। एक जैन आचार्य थे। उनके अनेक शिष्य थे। उनमें से एक मुनि कुष्ठ रोग से आक्रान्त हो गया। साधुओं ने उसके साथ आहार करना छोड़ दिया। लगता है उसने अपने आपको उपेक्षित और असहाय समझा। साधु जीवन से उसका मन विचलित हो गया। आचार्यप्रवर को इस बात का पता चला। वे उसके पास गए, उसको वात्सल्य और आश्वासन दिया। आहार का समय हुआ। आचार्य श्री ने उस साधु को बुलाया और कहा 'हम दोनों साथ में आहार करें।' गुरु की इस करुणा ने उस मुनि के विचार को बदल दिया। गुरु-कृपा का अपार पारावार उसकी बीमारी और मनोमालिन्य दोनों को साफ कर गया। गुरु को रोगी के साथ बैठकर आहार करते हुए देखा तो अन्य साधुओं को भी सेवा और वात्सल्य का बोध पाठ मिला।

मौके पर किस प्रकार आचार्य भी अपने शिष्यों का मार्ग प्रशस्त करते हैं, उन्हें सम्बल प्रदान करते हैं, प्रस्तुत वार्ता उसका उदाहरण है।

सेवा धर्मः परम गहनो योगिनामप्यगम्यः- यह सूक्त सेवा को महत्ता को प्रदर्शित करता है।

निर्जरा के बारह भेदों में नौवां भेद है- वैयावृत्य । व्यावृत्तस्य शुभव्यापारवतो भावः कर्म वा वैयावृत्यम्- शुभ कार्य में संलग्न का भाव अथवा कर्म वैयावृत्य है। वैयापृत्य शब्द भी मिलता है। इसका अर्थ है सेवा करना, कार्य में व्याप्त होना।

(क्रमशः)

जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के तपस्वी संत

आचार्यश्री रायचन्दजी युग

मुनिश्री गुलहजारीजी (नगुरा) दीक्षा क्रमांक : 103

मुनिश्री बड़े साहसिक, पुरुषार्थी और उत्कट तपस्वी थे। मुनिश्री घोर तपस्वी थे। आपने उपवास से ग्यारह तक लड़ीबद्ध तप किया। उपवास से आठ दिन तक की तपस्या बहुत बार की तथा 9/2, 10/2, 15/1 किये। आपने आजीवन एकान्तर तप स्वीकार किया, जो लगभग 42 वर्ष तक निरन्तर चलता रहा। मुनिश्री की तपस्या के कुल दिन 8500 के लगभग है, जो शासन में तब तक सर्वाधिक थे। मुनिश्री का खाद्य संयम उत्कृष्ट था। एकान्तर तप में पारणे के दिन 11 द्रव्यों के अतिरिक्त द्रव्यों का त्याग था। इसके अतिरिक्त विगय एवं रोटी आदि सभी द्रव्यों का परित्याग कर दिया, जो लगभग 14 वर्षों तक चला।

– साभार: शासन समुद्र –

जुलाई 2024
सप्ताह के विशेष दिन

29 जुलाई

भगवान कुंथुनाथ च्यवन कल्याणक

4 अगस्त

पक्खी

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. समाचार केवल पीडीएफ फॉर्मेट में इस मेल एड्रेस **abtyptt@gmail.com** पर ही भेजें।

निवेदक
अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संक्षिप्त खबर

भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का हुआ आयोजन

हनुमंतनगर। साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में अभातेयुप द्वारा निर्देशित भिक्षु दर्शन प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा सामूहिक मंगलाचरण से हुआ। साध्वीश्री ने भिक्षु स्वामी के अनेकों दृष्टांतों से जनता को अवगत कराया। साध्वीश्री ने कहा कि जिन्होंने भी भिक्षु स्वामी के सिध्दांतों को जीवन में उतारा है उनका जीवन बहुत ही सुलझा हुआ और सरल रहेगा। साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने गीतिका का संगान किया। इस उपलक्ष्य में तेरापंथ सभा अध्यक्ष तेजमल सिंघवी, युवा गौरव मूलचंद नाहर, युवक परिषद् अध्यक्ष अंकुश बैद, अभातेयुप से गौतम खाब्या, राकेश पोखरणा एवं पदाधिकारी गण व श्रावक समाज कि अच्छी संख्या में उपस्थिति रही।

पंच दिवसीय कपिंग थेरेपी कैंप का आयोजन

इचलकरंजी। तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा पंच दिवसीय कपिंग थेरेपी कैंप का आयोजन किया गया। तेयुप अध्यक्ष अनिल छाजेड़ ने आए हुए सभी महानुभाव का स्वागत किया। तेरापंथ सभा के अध्यक्ष अशोक बाफना एवं तेरापंथ महिला मंडल की ओर से उपाध्यक्षा सपना देवी बालड़ ने इस शिविर हेतु शुभकामनाएं प्रेषित की।पंच दिवसीय शिविर में गले, घुटने, कंधे, कमर, पीठ आदि के दर्द एवं अन्य शारीरिक थेरपी की गयी। शिविर के उदघाटन में तेरापंथ सभा, महिला मंडल, युवक परिषद् के सदस्य एवं गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। तेयुप मंत्री अंकुश बाफना ने आभार प्रकट किया।

"श्री उत्सव" का भव्य आयोजन

साउथ हावड़ा। तेरापंथ महिला मंडल द्वारा आयोजित 'श्री उत्सव - एक कदम स्वालम्बन की ओर' का शुभारंभ जैन संस्कार विधि से हुआ। उद्घाटन मुख्य अतिथि विधायक अरूप राय एवं संयोजिका संगीता बाफना द्वारा हुआ। मंडल अध्यक्ष चंद्रकांता पुगलिया ने सभी का स्वागत किया। विधायक अरुप राय ने कार्यक्रम को महिलाओं के विकास का बहुत सुन्दर कार्य बताया। विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारी गण ने शुभकामनाएं प्रेषित की। श्री उत्सव प्रदर्शनी में कुल 24 स्टॉल लगाए गए। कन्यामंडल द्वारा ज्ञानवर्धक एव मनोरंजक गेम खिलाए गए। अन्य समाज की बहनों ने भी विभिन्न प्रकार के स्टॉल्स लगाए। प्रदर्शनी में लगभग 800 आगन्तुक आए। कार्यक्रम का संचालन मंत्री रेखा बेगानी ने किया।

जप, तप एवं स्वाध्याय कार्यशाला

राजाजीनगर। भगवान महावीर स्वामी के 2550वें निर्वाणोत्सव के उपलक्ष में प्रत्येक अमावस्या को जप, तप एवं स्वाध्याय की आठवीं मासिक कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। उपासक राजमल बोहरा ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा लिखित पुस्तक 'श्रमण महावीर' से पुस्तक एवं उपासिका मंजू गन्ना और प्रवक्ता उपासक महेंद्रकुमार दक ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा लिखित पुस्तक 'महावीर का पुनर्जन्म' का स्वाध्याय करवाया। इस अवसर पर सभा निवर्तमान अध्यक्ष रोशनलाल कोठारी एवं सभा परिवार, महिला मंडल, तेयुप से निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश गन्ना, तेयुप नव मनोनीत अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया उपस्थित रही।

आग्रह से नहीं आदर से चलते हैं परिवार

मलाड़ (पूर्व)।

कनकिया लेवल्स में आयोजित परिवार प्रशिक्षण कार्यशाला में साध्वी डॉ. मंगलप्रज्ञाजी ने कहा- हर व्यक्ति अपने परिवार में सुख-शांति चाहता है। चाहने और पाने में अन्तर होता है। प्रश्न उपस्थित होता है- जो हम चाहते हैं, उसे कैसे प्राप्त करें? अतीत में यौगलिक परम्परा थी, जैसे-जैसे सभ्यता बढ़ी, विचारों में परिवर्तन हुआ, समूह में रहना प्रारंभ हुआ। परिवार व्यवस्था व्यक्ति के भीतर सुरक्षा का भाव पैदा करने वाली है। यह निश्चित है, जहां विस्तार होता है, वहां विचार भी अलग-अलग होते हैं। आज दूरियां भी तकरार का कारण बन रहा है।

परिवार में बड़े-बुजुर्ग और अनुभवी होते हैं, उनका अपना महत्व है। आज परिवार में रहने वाले सदस्य बुजुर्गों से छुटकारा चाहते हैं। 'हम जो कर रहे हैं, वह 100 प्रतिशत सत्य है', ऐसे आग्रह

परिवार का हर सदस्य यह संकल्प करे कि परस्पर किसी का दिल न दुखाए। स्वयं बदलाव का संकल्प करें, आत्मनिरीक्षण करें।

से परिवार में सुख-चैन नहीं हो सकता, परिवार हमेशा आदर से चला करते हैं। छोटों के प्रति वात्सल्य भाव और बड़ों के प्रति विनम्रता से परिवार में सौहार्द के सुमन खिलते हैं। समझदारी और विवेक से सम्बन्धों को निभाने वाले ही आनन्द का जीवन जी सकते हैं। परिवार का हर सदस्य यह संकल्प करे कि परस्पर किसी का दिल न दुखाए। स्वयं बदलाव का संकल्प करें, आत्मनिरीक्षण करें।

साध्वीश्री ने प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा- कभी वैमनस्य की स्थिति बन जाए तो क्षमा का सूत्र अपनाएं। जिस प्रकार आप साल के कैलेण्डर को बदलते हैं, वैसे ही हर दिन का कैलेण्डर बदलें। अपनी गलती के लिए झुकना सीखें, अनमोल रिश्तों की मिठास के लिए, स्थायित्व के लिए झुकें। धर्म को उपासना तक ही नहीं, जीवन व्यवहार में भी लाएं। कनकिया महिला ग्रुप ने साध्वीवृन्द का स्वागत सामूहिक संगान से किया। तेरापंथ युवक परिषद्, मलाड़ के प्रचार मंत्री शांति धोका ने साध्वी श्री का भावपूर्ण स्वागत किया।

साध्वी सुदर्शनप्रभाजी, साध्वी राजुलप्रभाजी एवं साध्वी शौर्यप्रभाजी ने 'परिवार उसी को कहते हैं' गीत का संगान किया। साध्वी शौर्यप्रभाजी ने अपने वक्तव्य में कहा- स्वस्थ परिवार और आनंदमय जीवन के लिए अनेकान्त सिद्धांत को समझना आवश्यक है।

इस अवसर पर तेरापंथ सभा, मुंबई के अध्यक्ष माणकचंद धींग ने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी सुदर्शनप्रभाजी ने किया।

कैंसर जांच शिविर का आयोजन

चेन्नई।

अभातेममं के तत्वावधान में तेरापंथ महिला मंडल चेन्नई की आयोजना में गणगौर (राजस्थानी एसोसिएशन तमिलनाडु) एवं श्री जैन मेडिकल रिलीफ सोसाइटी के सहयोग से कैंसर केयर केम्प का आयोजन तेरापंथ सभा भवन, साहुकारपेट, चेन्नई में किया गया।

नमस्कार महामंत्र के पश्चात महिला मण्डल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान हुआ। अभातेममं कार्यसमिति सदस्या माला कातरेला और दीपा पारख ने अभातेममं के पचास वर्षीय इतिहास के साथ संस्था द्वारा संचालित आध्यात्मिक, सामाजिक गतिविधियों का उल्लेख करते हुए महिला स्वास्थ्य जागरूकता के अन्तर्गत इस कार्य के लिए स्थानीय महिला मण्डल, गणगौर और सहयोगी संस्थाओं को साधुवाद सम्प्रेषित किया।

महिला मण्डल अध्यक्षा लता पारख ने स्वागत करते हुए सभी संस्थाओं को धन्यवाद दिया एवं बहनों को अपने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। गणगौर चेयरपर्सन रेखा सिंघी ने गणगौर की ओर से स्वागत स्वर प्रस्तुत किया। गणगौर कोर्डिनेटर विनोद जैन ने बताया कि महिला बेटी, पत्नी, माँ होते हुए परिवार के लिए ही ज्यादा ध्यान देती है, अपने स्वास्थ्य पर ध्यान नही दे पाती। हेमंत दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किए।

मेडिकल कैम्प में वीएस एवं एंडरसन हॉस्पिटल तथा जैन मेडिकल की टीम द्वारा जाँच की गई।

मंच संचालन डॉ. संतोष नाहर, वनीता गेलडा और रक्षा आच्छा ने किया। आभार ज्ञापन नम्रता सेठिया ने दिया। कैम्प में 51 बहनों ने जाँच करवाई।

संस्कार बोध कार्यशाला का आयोजन

उत्तर कोलकाता।

मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा- 3 के सान्निध्य में संस्कार बोध कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् उत्तर कलकत्ता द्वारा किया गया।

इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- संस्कार दो प्रकार के होते हैं- नैसर्गिक व अधिगमज। हम सौभाग्यशाली हैं क्योंकि हमें जैन धर्म व तेरापंथ धर्मसंघ के संस्कार विरासत में मिले हैं। श्रावक समाज को संघीय संस्कारों का बोध होना बहुत जरूरी है। हम जैन हैं, तेरापंथी हैं, वैसा ही आचरण भी होना चाहिए। भीतर में व बाहर जैनत्व झलकना चाहिए।

रहन-सहन, खान-पान, वस्त्र-परिधान स्वस्थ रहना चाहिए। माला फेरना, चारित्रात्माओं को वंदना करना, बातचीत करना, गोचरी करवाना, भावना भाना आदि का विवेक होना चाहिए। मुनिश्री ने प्रतिकमण, प्रतिलेखन, पाड़िहारिय आदि की जानकारी दी। कार्यक्रम का शुभारंभ मुनि कुणाल कुमार जी द्वारा गीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष मनीष बरडिया ने दिया।

आभार ज्ञापन मंत्री प्रदीप हिरावत ने किया। संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

विभिन्न संस्थाओं का शपथ ग्रहण कार्यक्रम समारोह

लाडनूं

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा, लाडनूं के सत्र 2024-26 का एवं तेरापंथ युवक परिषद, लाडनूं के सत्र 2024-25 का शपथ ग्रहण समारोह 'शासनगौरव' साध्वी कल्पलताजी एवं सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी प्रमिलाकुमारीजी के सान्निध्य में ऋषभ द्वार प्रांगण में आयोजित हुआ। साध्वीश्री के नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन रणजीत सिंह खटेड़ ने किया। तेरापंथ सभा के नवनिर्वाचित अध्यक्ष प्रकाशचंद बैद ने अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए सभी के सहयोग की कामना की। उन्होंने राजेंद्र खटेड़ को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, विकास बोथरा को उपाध्यक्ष, राकेश कोचर को मंत्री, सुशील सुराणा एवं रणजीत दूगड़ को सहमंत्री, महेंद्र बाफना को कोषाध्यक्ष एवं मनोज गोलछा को संगठन मंत्री के रूप में तथा कार्यसमिति मनोनयन की घोषणा की। 'शासनगौरव' साध्वी कल्पलताजी ने नव चयनित टीम के सदस्यों को संघ व समाज सेवा के साथ-साथ अपना आध्यात्मिक विकास करने और अपनी आंतरिक पवित्रता बढ़ाने की प्रेरणा दी। साध्वी प्रमिलाकुमारीजी ने संघ और संघपति के प्रति सदा समर्पित रहते हुए समाजोत्थान एवं धर्मोत्थान के कार्यों में अग्रसर रहने की प्रेरणा दी।

तेरापंथ युवक परिषद के नवनिर्वाचित अध्यक्ष सुमित मोदी ने अध्यक्षीय वक्तव्य रखते हुए उपाध्यक्ष अजय चोपड़ा, मनीष बोथरा, मंत्री राजेश बोहरा, सहमंत्री पीयूष सुराना, सिद्धार्थ डूंगरवाल, संगठन मंत्री ऋषभ खटेड़ सहित कार्यसमिति के नामों की घोषणा की। नवमनोनीत सभा मंत्री राकेश कोचर ने अपने भाव व्यक्त किये। जैन विश्व भारती के परामर्शक भागचंद बरड़िया ने दोनों संस्थाओं की टीम को शपथ ग्रहण करवाई। तेरापंथ महिला मंडल, लाडनूं की मंत्री राज कोचर, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, लाडनूं के अध्यक्ष शोभन कोठारी, अणुव्रत समिति, लाडनूं की ओर से रेणु कोचर ने दोनों संस्थाओं के नवनिर्वाचित अध्यक्ष और उनकी टीम को बधाई देते हुए सफल कार्यकाल की मंगलकामना की। कार्यक्रम का कुशल संचालन राजेन्द्र खटेड़ ने किया।

त्रिनगर

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में प्रथम बार गठित त्रिनगर सभा का शपथ ग्रहण समारोह आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने वक्तव्य में कहा- शासन-सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी के नेतृत्व में धर्मसंघ गगनचुम्बी ऊंचाईयों का स्पर्श कर रहा है। आचार्य महाश्रमणजी अक्षय पुण्याई के पुंज है। वे अपनी पुण्याई के साथ-साथ दस आचार्यों की पुण्याई एक साथ भोग रहे हैं। साध्वीश्रीजी ने कहा- तेरापंथ धर्मसंघ के गौरव को अभिवर्द्धित करने में श्रावक समाज एवं सभा-संस्थाओं का भी बड़ा योगदान रहा है। तेरापंथ धर्मसंघ की संस्थाओं में महासभा का सर्वोपरि स्थान है। महासभा के अन्तर्गत आज सैंकड़ों क्षेत्रीय सभाएं संघ का काम कर रही है। क्षेत्रीय सभाओं में एक नाम है त्रिनगर सभा का। त्रिनगर दिल्ली का छोटा सा उपनगर है। यहां पहली बार सभा का गठन हुआ है और आज नवगठित टीम का शपथग्रहण है। छोटे से क्षेत्र का उत्साह तारिफे-काबिल है। संजीव जैन के कंधों पर नया दायित्व आया है। उन्होंने युवा टीम को सभा में जोड़ा है। आपकी टीम दिल्ली में नए इतिहास का सृजन करे। साध्वी वृंद ने प्रेरक गीत का संगान किया। नवमनोनीत अध्यक्ष संजीव जैन ने अपने भावों की अभिव्यक्ति देते हुए अपनी टीम एवं कार्यकारिणी की घोषणा की। महासभा के उपाध्यक्ष संजय खटेड़ ने अध्यक्ष पद की शपथ दिलाई। दिल्ली सभाध्यक्ष सुखराज सेठिया ने पदाधिकारियों एवं महासभा प्रभारी मन्नालाल बैद ने कार्यकारिणी सदस्यों को शपथ दिलाई। दिगम्बर समाज से सुनिल जैन, स्थानकवासी समाज से महावीर प्रसाद ने अपने भाव व्यक्त किए। मंत्री मनोज बेगवानी ने आभार एवं सभा एवं महिला मंडल ने मंगल संगान किया। संचालन प्रदीप संचेती ने किया।

चलथान

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन एवं अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता की अध्यक्षता में तेरापंथ भवन चलथान में तेरापंथ युवक परिषद चलथान के नव मनोनीत अध्यक्ष दीपक खाब्या एवम् उनकी टीम के दायित्व ग्रहण समारोह के कार्यक्रम का आयोजन जैन संस्कार विधि द्वारा करवाया गया। अभातेयुप जैन संस्कार के राष्ट्रीय प्रभारी मुख्य संस्कारक मनीष मालू ने नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। साथी संस्कारक के रूप में अभातेयुप सदस्य एवं संस्कारक ज्ञान दुगड़, संस्कारक राकेश दक, संस्कारक विपिन पितलिया की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन करवाया एवम् नव मनोनीत अध्यक्ष दीपक खाब्या को शपथ दिलाई। अध्यक्ष दीपक खाब्या ने अपनी पूरी टीम को शपथ दिलाई। तेरापंथ सभा चलथान के शाखा प्रभारी संपत आचलिया एवं तेयुप चलथान शाखा प्रभारी अमित गन्ना ने अपने भाव व्यक्त किए और शुभकामना प्रेषित की। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जयेश मेहता ने अपने वक्तव्य से उपस्थित श्रावक समाज के अंदर नई चेतना का संचार किया। अध्यक्ष दीपक खाब्या ने अपने भाव व्यक्त किए। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री राकेश लोढ़ा ने किया।

हैदराबाद

तेरापंथ युवक परिषद् हैदराबाद के सत्र 2024-25 का शपथ ग्रहण आनंद जैन भवन में आचार्य महाश्रमण जी की सुशिष्या शासन श्री साध्वी शिवमाला जी आदि ठाणा 4 के सानिध्य में संपन्न हुआ। आचार्य भावचंद्र जी और साध्वी भावितांजी म.सा. की इस कार्यक्रम में विशेष उपस्तिथि रही। कार्यक्रम की शुरुआत भव्य विघ्न निवारक, समृद्धि कारक अनुष्ठान के साथ हुई। जैन संस्कार विधि से शपथ ग्रहण कार्यक्रम की विधिवत शुरुआत हुई जिसमें संस्कारक ललित लूनिया, राहुल गोलछा, जिनेन्द्र सेठिया एवम आशीष दक ने मंगल मंत्रोच्चार से कार्यक्रम को संपादित किया। निवर्तमान अध्यक्ष निर्मल दुगड़ ने चयनित अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा को विधिवत शपथ ग्रहण करवाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित की। नव निर्वाचित अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने पदाधिकारीगण एवं सम्पूर्ण कार्यकारिणी को शपथ दिलाई और तेयुप के त्रिआयामी लक्ष्य सेवा-संस्कार एवम् संगठन के विभिन्न कार्यक्रमों को इस कार्यकाल में संपादित करने की घोषणा की।

विजयनगर

तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर के नव मनोनीत अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा एवं उनकी नव मनोनीत टीम का शपथ ग्रहण आयोजन साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा 4 के सान्निध्य में जैन संस्कार विधि के द्वारा विजयनगर स्थित अर्हम भवन में सम्पन्न हुआ। संस्कारक की भूमिका में संस्कारक छत्र मालू, भंवर लाल मांडोत, अभिषेक कावड़िया, विकास बाँठिया, धीरज भादानी ने निर्दिष्ट विधि विधान एवं मंगल मन्त्रोचार से कार्यक्रम को सम्पन्न करवाया। विजय स्वर संगम द्वारा मंगलाचरण किया गया। अभातेयुप प्रबुद्ध विचारक दिनेश पोखरणा ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। परिषद् निवर्तमान अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने पधारे हुए सभी अतिथियों का स्वागत किया एवं नव मनोनीत अध्यक्ष कमलेश चोपड़ा को अध्यक्ष पद की गोपनीयता की शपथ दिलाई। तत्पश्चात कमलेश चोपड़ा ने अपने प्रबंध मंडल परामर्शक एवं कार्यसमिति की घोषणा की एवं सभी को शपथ दिलाई। तेरापंथ युवक परिषद् प्रबंध मंडल में उपाध्यक्ष प्रथम विकास बाँठिया, उपाध्यक्ष द्वितीय अशोक मारू, मंत्री संजय भटेवरा, सहमंत्री प्रथम पवन बैद, सहमंत्री द्वितीय कमलेश दक, कोषाध्यक्ष अमित नाहटा एवं संगठन मंत्री पंकज कोचर को मनोनीत किया। इस अवसर पर साध्वीश्री जी ने मंगल आशीर्वचन देते हुए नव मनोनीत टीम को शुभकामनाएं संप्रेषित की एवं कहा कि नई टीम को विनय के साथ सबको साथ लेकर चलना है। पूरी युवा शक्ति को परिषद् में जोड़कर नये-नये कार्यों को सम्पादित करना है। आध्यात्मिकता की तरफ युवा शक्ति को ले जाना है। अभातेयुप अभूतपूर्व अध्यक्ष विमल कटारिया ने नव टीम को शुभकामना सम्प्रेषित करते हुए विजयनगर के गौरवशाली इतिहास को ओर नयी ऊँचाइयां प्रदान करने के साथ नए अध्यक्ष एवं टीम के प्रति मंगलकामना प्रेषित की। संचालन तेयुप पूर्व अध्यक्ष अमित दक ने किया। आभार तेयुप मंत्री संजय भटेवरा ने किया।

पर्वत पाटिया

मुनि विनीतकुमार जी व मुनि आकाशकुमारजी आदि ठाणा -4 के सान्निध्य में तेरापंथ सभा व तेयुप का शपथ ग्रहण कार्यक्रम आयोजित किया गया। मुनिश्री के नमस्कार महामंत्र उच्चारण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई। सभा के प्रभारी सुनील श्रीमाल द्वारा श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। सभा गीत का संगान मंत्री प्रदीप गंग व कोषाध्यक्ष महेन्द्र बोथरा द्वारा किया गया। सभा के शाखा प्रभारी द्वारा नवनियुक्त अध्यक्ष गौतम ढेलडिया को सत्र 2024-26 के लिए शपथ दिलाई गई।नवनियुक्त अधयक्ष ने अपनी टीम की घोषणा की और शपथ दिलाई। तेयुप के निर्वतमान अध्यक्ष दिलीप चावत ने सभी आगन्तुकों का स्वागत करते हुए तेयुप के सत्र 2024-25 के नवनियुक्त अध्यक्ष रवि मालू को शपथ दिलाई। रवि मालू ने अपनी टीम की घोषणा करते हुए शपथ दिलाई। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के गुजरात आंचलिक प्रभारी अनिल चंडालिया ने सभा व तेयुप की टीम को बधाई प्रेषित करते हुए बताया कि आगामी गुरूदेव के चार्तुमास में सभी अपने-अपने दायित्व का अच्छे से निर्वहन करते हुए ऐतिहासिक चार्तुमास बनाएं। अभातेयुप के कार्यकारिणी सदस्य कुलदीप कोठारी ने बधाई प्रेषित की। मुनि विनीतकुमार जी व आकाशकुमार जी ने पूरी टीम को बधाई प्रेषित करते हुए कहा पद तो एक औपचारिकता है कार्य सभी मिल-जुलकर करें और समय का सदुपयोग करते हुए गुरुदेव की इंगित की अराधना करते हुए ज्ञान, दर्शन, चरित्र व तप की ओर बढते रहें। आभार ज्ञापन सभा उपाध्यक्ष संजय बोहरा ने किया। संचालन सभा के संगठन मंत्री पवन कुमार बुच्चा ने किया।

वाशी

तेरापंथी सभा वाशी का शपथ ग्रहण व भिक्षु भक्ति का आयोजन भिक्षु महाश्रमण फाउंडेशन वाशी में हुआ। प्रथम चरण में भिक्षु भक्ति का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के साथ उपासक सोहनलाल कोठारी द्वारा किया गया। दूसरे चरण में जैन संस्कार विधि द्वारा शपथ ग्रहण समारोह आयोजित किया गया। सांताक्रुज से उपस्थित संस्कारक किरण परमार, महेश बाफना, पवन चोरडिया ने विधिवत कार्यक्रम सम्पादित किया। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल वाशी द्वारा एवं विजय गीत का संगान तेरापंथ युवक परिषद् के भिक्षु भक्ति मंडल वाशी द्वारा हुआ। श्रावक निष्ठा-पत्र का वाचन तेरापंथी सभा वाशी के पूर्व अध्यक्ष संपतलाल बागरेचा ने किया। तेरापंथी सभा मुंबई के अध्यक्ष मानक धींग ने तेरापंथी सभा टीम को शपथ दिलाई एवं शुभकामनाएं दी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष नरेश सोनी, पूर्व अध्यक्ष बी.सी. भलावत ने तेरापंथ युवक परिषद् वाशी एवं किशोर मंडल को शपथ दिलाई एवं युवक परिषद् के आयाम को आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा के मंत्री पवन परमार ने किया।

कार्यक्रम का संचालन श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा मुंबई के वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं फाउंडेशन के महामंत्री बाबूलाल बाफना ने किया। कार्यक्रम में संयोजक अनिल सिंघवी एवं चेतन कोठारी का सराहनीय श्रम लगा।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 105वें जन्म दिवस पर विविध आयोजन

मोदीनगर, जयपुर

'अभ्यर्थना अध्यात्म के हिमालय की' कार्यक्रम 'शासनश्री' साध्वी मधुरेखाजी के सान्निध्य में मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। बहनों ने मंगलाचरण एवं महिला मंडल की सदस्याओं ने श्रद्धागीत प्रस्तुत किया। साध्वी श्री ने कहा कि कालजयी व्यक्तित्व के धनी बालक नत्थू ने 10 वर्ष की उम्र में परम पूज्य कालुगणी के चरणों में अपनी जीवन की पतवार सौंप दी। मुनि तुलसी के संरक्षण में रहकर जीवन को संवारते गये। अनेक रोचक संस्मरणों को बताते हुए साध्वीश्री ने कहा- आचार्यश्री महाप्रज्ञजी विनम्रता, समर्पण व संकल्प शक्ति से मुनि नथमल से आचार्य महाप्रज्ञ बन गये। तलहटी से शिखर तक की यह यात्रा लाखों व्यक्तियों के लिए आकर्षण का केन्द्र बन गई। साध्वी सुव्रतयशाजी ने वक्तव्य एवं साध्वी मधुयशाजी ने कविता के माध्यम से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन सुरेन्द्र सेठिया ने किया।

पीतमपुरा, दिल्ली

साध्वी अणिमाश्रीजी के सान्निध्य में सरस्वती विहार के जम्मड़ गेस्ट हाउस में प्रज्ञा पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ का जन्म दिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में आयोजित हुआ। साध्वीश्री ने अपने उद्गार व्यक्त करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञजी इस सदी के दुर्लभ आचार्य थे। उन्होंने आगम संपादन जैसा दुरूह कार्य करके तेरापंथ धर्म संघ को विशिष्टता प्रदान की। लगता है उनकी अतिन्द्रिय चेतना जागृत थी। उनकी अतीन्द्रिय चेतना ने संघ के भाल पर सृजन के नूतन स्वास्तिक उकेरे। वे महाज्ञानी थे किन्तु अहंकार से कोसों दूर थे, उनकी विनम्रता प्रणम्य एवं प्रेरक है। उनकी उपशम कशाय की साधना ने उनको महात्मा महाप्रज्ञ बना दिया। उनकी साधना के कुछ अंश हमारे भीतर अवतरित हो जाएं तो हम भी महाप्रज्ञ बनने की दिशा में प्रस्थान कर सकते हैं। साध्वी कर्णिकाश्रीजी ने कहा कोई भी व्यक्ति जन्म के साथ बड़ा या महान नहीं होता। अपने गुणों के कारण व्यक्ति महानता के शिखर पर आरूढ़ होता है, आचार्य महाप्रज्ञ जी अपने गुणों के कारण महान बने। डॉ. साध्वी सुधाप्रभाजी ने कहा ब्रह्मांड में नवग्रहों को शक्तिशाली माना जाता है। आचार्य महाप्रज्ञ जी में नवग्रहों की शक्तियां समाहित थी इसलिए वे शक्तिधर कहलाए। अखिल भारतीय महिला मंडल की चीफ ट्रस्टी पुष्पा बेंगानी, दिल्ली सभा के उपाध्यक्ष विमल बैंगानी, राजेश खिमेसरा, पीतमपुरा सभा् मंत्री विरेन्द्र जैन आदि ने अपनी भावांजलि अर्पित की। महिला मंडल की बहनों ने मंगल संगान किया। अध्यक्ष लक्ष्मीपत भूतोड़िया ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मैत्रीप्रभाजी ने किया।

डोंबिवली वेस्ट

उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी के सान्निध्य में प्रज्ञा पुरुष तेरापंथ धर्मसंघ के दशमेश आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 105वां जन्मदिवस बड़े ही हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में मुनिश्री ने अपने उद्गार प्रकट करते हुए फरमाया कि सरलता, स्वच्छता, सहिष्णुता, सहजता, समन्वय नीति के पोषक, विनय, विद्या, विवेक के पारावर थे आचार्यश्री महाप्रज्ञजी। आचार्य महाप्रज्ञजी की कर्त्तव्य परायणता, गुरुभक्ति अपने आप में बेजोड़ थी। उनके द्वारा लिखित, सम्पादित साहित्य आज तेरापंथ और जैन धर्म के लिए ही नहीं जन-जन के लिए उपयोगी बना है। प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान के द्वारा उन्होंने जन-जन को सुख-शांति और आनंदमय जीवन जीना सिखाया। वे जितने कालूगणी के कृपापात्र थे, उससे ज्यादा आचार्यश्री तुलसी के कृपापात्र बने और आध्यात्मिक वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण देश के ही नहीं अपितु विश्व के शीर्षस्थ लोगों के लिए श्रद्धा के स्थान बने।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मुनि राकेशकुमारजी के मंगलाचरण से हुआ। मुनि अमनकुमारजी ने स्वरचित गीत का संगान किया। सागर इंटोदिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। युवक परिषद, कन्या मंडल ने मधुर गीतों का संगान किया। महिला मंडल द्वारा शब्द चित्र की प्रस्तुति हुई। मदन कोठारी, जतन डागा आदि ने भी अपने सारगर्भित विचार प्रकट किए। महाप्रज्ञ चालीसा का सामूहिक संगान हुआ।

विद्याधर नगर, जयपुर

'शासन गौरव' साध्वी कनकश्रीजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा, जयपुर के तत्त्वावधान में आचार्यश्री महाप्रज्ञजी की 105वीं जन्म जयंती प्रज्ञा दिवस के रूप में आयोजित हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री द्वारा समुच्चारित नमस्कार महामंत्र से हुआ। साध्वी मधुलेखाजी एवं साध्वी समितिप्रभाजी ने महाप्रज्ञ अष्टकम् का संगान किया। बहुश्रुत परिषद् की सम्मान्य सदस्या साध्वी कनकश्रीजी ने आचार्यप्रवर के कालजयी व्यक्तित्व को वंदन करते हुए कहा- अध्यात्म जगत की विरलतम विभूति थे आचार्यश्री महाप्रज्ञ। वे अथाह ऊर्जा के अक्षय स्रोत थे। दुनियाभर के जैन विद्वानों, दार्शनिकों एवं चिंतकों में उनका अग्रणी स्थान था। वे पश्चिमी धर्मदर्शन के भी गंभीर अध्येता एवं सुविख्यात प्रवक्ता थे। प्रज्ञा पुरुष के प्रेरक सान्निध्य के अनुभवों को साझा करते हुए उन्होंने कहा- वे वैज्ञानिक दृष्टि संपन्न लोकमान्य महर्षि थे। नया मानव, नया समाज और नया विश्व की संरचना उनका लक्ष्य था। उस दिशा में उनकी साधना और आध्यात्मिक पुरुषार्थ निरंतर चलता रहा। साध्वी मधुलताजी ने प्रज्ञा दिवस को प्रज्ञा जागरण का त्योहार बताते हुए महाप्रज्ञ साहित्य के अनुशीलन की प्रेरणा दी एवं ध्यान, कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा के प्रयोगों को शांत संतुलित जीवन जीने का मंत्र बताया।

साध्वी संस्कृतिप्रभाजी ने कहा कि अध्यात्मयोगी आचार्यश्री महाप्रज्ञजी आत्मद्रष्टा, युगद्रष्टा और भविष्यद्रष्टा आचार्य थे। साध्वीवृन्द ने भावपूर्ण गीत के माध्यम से आराध्य की अभ्यर्थना की। महिला मंडल की युवती बहनों ने मधुर संगीत के स्वरों में धर्मचक्रवर्ती आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के कर्तृत्व का रेखाचित्र प्रस्तुत कर दिया। सुरेन्द्रकुमार बेंगाणी ने अपने भाव सुमन समर्पित किए। जयपुर तेरापंथ शिक्षा समिति के अध्यक्ष नरेश मेहता ने आचार्य श्री महाप्रज्ञजी की अनंत कृपा और वत्सलता का स्मरण करते हुए कहा- मेरे जैसे अनेक साधारण कार्यकर्ताओं को प्रोत्साहित कर उन्होंने संघ सेवा के साथ जोड़ा और उपयोगी बनाया। तेयुप, जयपुर के पूर्व अध्यक्ष श्रेयांस बेंगाणी ने आभार ज्ञापित किया। छवि बेंगानी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

छापर

सेवाकेंद्र व्यवस्थापक डॉ. मुनि विनोद कुमारजी के सान्निध्य में भिक्षु साधना केंद्र में आचार्य श्री महाप्रज्ञ का 105वां जन्मोत्सव मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत महिला मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण से की। प्रदीप सुराणा ने आयोजकीय पृष्ठभूमि की जानकारी देते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के उत्थान में आचार्य महाप्रज्ञ की भूमिका को अहम् बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता शिक्षाविद् कमलाप्रसाद चांगल ने की एवं रेखाराम गोदारा मुख्य अतिथि व कवि गौरीशंकर व धन्नाराम प्रजापत विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मुनि विनोदकुमारजी ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रदान किए गए जीवन विज्ञान जैसे अवदान के जरिये मानव मात्र का कल्याण हो सकता है। उन्होंने कहा कि साहित्य जगत में आचार्य महाप्रज्ञ ने समूचे विश्व में अपनी अमिट छाप छोड़ी जो लंबे अरसे तक अविस्मरणीय रहेगी। कार्यक्रम में विभिन्न संस्थाओं के सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति के संरक्षक प्रदीप सुराणा ने किया।

मलेरकोटला

'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा मलेरकोटला के निर्देशन में हनुमान मंदिर में आचार्य महाप्रज्ञ जी का 105वां जन्म जयंती का भव्य कार्यक्रम मलेरकोटला महिला मंडल के मंगलाचरण से प्रारंभ हुआ। तेरापंथ सभा मलेरकोटला के अध्यक्ष अनिल जैन ने आगन्तुक व्यक्तियों का स्वागत किया।

'शासनश्री' साध्वी बसंतप्रभा जी ने कहा-अध्यात्म के शिखर पुरुष आचार्य महाप्रज्ञ ने जीवन में सत्य की खोज के नए रास्ते खोले हैं। युग को तनाव की भीड़ में शांति का संदेश दिया है। उनके वैचारिक मंतव्य में राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय समस्याओं का समाधान था। उनकी चर्चाओं में आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व निर्माण की परिकल्पना थी। मानवता के मसीहा ने मानवीय एकता, साम्प्रदायिक सौहार्द, नैतिक एवं चारित्रिक मूल्यों के संवर्धन के क्षेत्र में विशेष कार्य किए हैं।

साध्वी संकल्पश्रीजी ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ जी 20वीं सदी के ऐसे योगी पुरुष थे जिन्होंने कोई विशेष स्कूली शिक्षा प्राप्त नहीं की किंतु अनुभवों से प्राप्त बोध ने मानव जाति को एक नया दर्शन नया मानव प्रदान किया। मलेरकोटला महिला मंडल ने रोचक कविता प्रस्तुत की। ज्ञानशाला के बच्चों एवं धूरी महिला मंडल ने सुमधुर गीत की प्रस्तुति दी। साध्वी कल्पमालाजी, साध्वी रोहितयशाजी ने सिम्योजियम की प्रस्तुति दी। अहमदगढ़ से प्रीति जैन, पटियाला से वंदना जैन, धूरी तेरापंथ सभा अध्यक्ष भीमसेन जैन, पंजाब तेरापंथ सभा के निर्वाचित अध्यक्ष सुरेंद्र मित्तल, उपाध्यक्ष संजय जैन ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। आभार ज्ञापन सभा की मंत्री डिंपल जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी कल्पमालाजी ने किया।

साउथ कोलकाता

मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 105वें जन्मदिवस के सन्दर्भ में 'आचार्य महाप्रज्ञ विचार दर्शन सेमिनार' का भव्य आयोजन साउथ कोलकाता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा के द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर मुनि जिनेशकुमारजी ने कहा- व्यक्ति जन्म से नहीं, अपने गुणों से बड़ा होता है। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी अपने आचार, विचार, संस्कार, व्यवहार, अध्ययन व चिन्तन से बड़े हुए। उनका जीवन निर्मल, निश्छल निरभिमानी और मां के दूध की तरह पवित्र था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी व्यक्ति नहीं विचार थे। उनके विचारों में अहिंसा व करुणा झलकती है। उन्होंने व्यक्ति, परिवार व समाज की स्वस्थता पर बल दिया क्योंकि ये स्वस्थ होंगे तभी देश और दुनिया स्वस्थ होगी।

मुनिश्री ने आगे कहा- आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का चिन्तन उर्वर था। समस्याओं का समाधान देने वाला था। आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी फरमाते थे आज देश के सामने तीन प्रमुख समस्याएं हैं - गरीबी, जातिवाद और साम्प्रदायिक कट्टरता। मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम् के संगान से हुआ। स्वागत भाषण साउथ कोलकाता सभा के अध्यक्ष विनोद चोरड़िया ने दिया। प्रधान न्यासी तुलसी दुगड़ ने अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथ महिला मंडल ने सुमधुर गीत का संगान किया। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री कमलकुमार कोचर ने किया।

कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर जै. वि. भा. के पूर्व अध्यक्ष सुरेन्द्र चोरड़िया व इन्कम टैक्स अपीलेन्ट ट्रिब्यूनल जज मनीष बोरड विशेष रूप से उपस्थित थे।

आचार्यश्री महाप्रज्ञ के 105वें जन्म दिवस पर विविध आयोजन

अमराईवाड़ी

तेरापंथ धर्मसंघ के दसवें अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 105वां जन्म दिवस साध्वी काव्यलताजी के सान्निध्य में तेरापंथ भवन, अमराईवाड़ी में मनाया गया। कार्यक्रम की मंगल शुरूआत तेरापंथ महिला मंडल, अमराईवाड़ी की बहनों ने सुमधुर गीत से की। साध्वीश्री ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा- आचार्य महाप्रज्ञ जी समर्पण के पुरोधा पुरुष थे। समर्पण से ही उन्होंने नत्थू से महाप्रज्ञ तक की यात्रा को संपन्न किया। उन्होंने अपनी प्रतिभा से आगमों का अनुसंधान किया। नए-नए विविध साहित्य का सृजन किया, प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान का आलोक प्रदान किया। वे तेरापंथ के विलक्षण आचार्य थे। कार्यक्रम का संचालन साध्वी ज्योतियशाजी ने किया। साध्वी सुरभिप्रभाजी एवं साध्वी राहतप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

गुवाहाटी

मुनि प्रशांतकुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के 105वें जन्म दिवस का आयोजन हुआ। मुनिश्री ने कहा - आचार्यश्री महाप्रज्ञजी एक महान अध्यात्म योगी संत थे। उनकी अन्तःप्रज्ञा जागृत थी। वर्षों तक अपने शरीर पर साधना के विभिन्न प्रयोग करने के अनुभवों के पश्चात् प्रेक्षाध्यान नामक ध्यान-योग पद्धति का उन्होंने आविष्कार किया। अध्यात्म योग की गहराई में पहुंचकर जो अनमोल रत्न उन्होंने प्राप्त किए उन्हें ध्यान के विविध प्रयोगों के रूप में जनता के सामने प्रस्तुत किए। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के साहित्य का एक विशाल पाठक संसार है। जो देश के हर भू-भाग में फैला हुआ है। उनका साहित्य पढ़ने वाले चाहे साहित्यकार हो, राजनीतिज्ञ हो, वैज्ञानिक हो या अन्य हर कोई भी हर किसी को ऐसा महसूस होता है यह पुस्तक जैसे मेरे लिए ही लिखी गई है। हर किसी को अपनी समस्या का समाधान आचार्यश्री महाप्रज्ञजी के साहित्य में मिल जाता है। मुनि कुमुदकुमारजी ने कहा- खुले आकाश में जन्म लेने वाले बालक नत्थू ने खुले आकाश जैसी ही विराटता को प्राप्त किया। विनय और गुरु के प्रति समर्पण के वो मूर्तिमान स्वरूप थे। ज्ञान की गहराई, व्यक्तित्व की ऊंचाई, प्रतिष्ठा एवं संघ के सर्वोच्च पद आचार्य पद पर प्रतिष्ठित किए जाने के बाद भी अहंकार उन्हें छू भी नहीं पाया। सिग्नेचर एस्टेट की श्राविकाओं के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। सभा अध्यक्ष बाबूलाल सुराणा, तेरापंथ युवक परिषद्, महिला मंडल मंत्री ममता दुगड़, अणुव्रत समिति उपाध्यक्ष नवरतन गधैया, बहादुर सिंह सुराणा ने वक्तव्य एवं गीत के द्वारा भावांजलि अर्पित की।

चिकमंगलुरु

तेरापंथ के दशम आचार्य महाप्रज्ञ के 105वें जन्मदिवस के अवसर पर चिकमंगलूरू के 1200 वर्ष पुराने वेणुगोपाल मंदिर के प्रांगण में आचार्य महाप्रज्ञ के जन्मोत्सव समारोह में मुनि मोहजीतकुमारजी ने विनयांजलि प्रकट करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ यथा नाम तथा प्रज्ञा के धनी थे। उनका चिन्तन वैश्विक मानस को प्रभावित करने वाला था। उनके द्वारा किए गये कार्यों का आकलन करना दुनिया के दुर्लभ कामों में एक काम होगा। आचार्य महाप्रज्ञ का निश्चय और व्यवहार जगत इक्कीसवीं सदी में जीने वालों के लिए प्रेरणा का आधार है। मुनि जयेशकुमारजी ने आचार्य महाप्रज्ञ के व्यक्तित्व और कर्तृत्व का सांगोपांग विवेचन करते हुए कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ का समर्पण युगों-युगों तक आदर्श के रूप में मुखर रहेगा। उनकी महान प्रज्ञा विश्व मानस को आलोक दिखाने वाली थी। उन्होंने इक्कीसवीं सदी में होने वाले मानव की परिकल्पना 20वीं सदी में ही प्रकट कर दी थी। मुनि भव्यकुमार जी ने 'महाप्रज्ञ की महिमा' गीत का संगान कर श्रद्वार्पण किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष ताराचन्द सेठिया ने विचार प्रकट किए। महिला मंडल की सदस्याओं ने गीत एवं भरत बरलोटा ने आभार प्रकट किया।

बालोतरा

मुनि यशवंत कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 105वां जन्मदिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में मनाया गया। मुनि यशवंतकुमारजी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी 20वीं सदी के देदीप्यमान नक्षत्र थे। आपकी वाणी में अनुपमता सरलता थी, आपके शब्दों में अदभुत चमत्कार था। आपने स्वयं ध्यान-जप-साधना से संयम जीवन को जीया और जन-जन को प्रेक्षाध्यान का अवदान दिया। इस अवसर पर तेरापंथ सभा उपाध्यक्ष ललित जीरावला, तेयूप उपाध्यक्ष हरीश जीरावला, महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संखलेचा, ज्ञानशाला मुख्य प्रशिक्षक उर्मिलाजी सालेचा, देवीबाई छाजेड़ ने व्यक्तव्य द्वारा अपने विचार रखे। कन्या मंडल द्वारा मंगलाचरण एवं महिला मंडल द्वारा गीत की प्रस्तुति दी गई। कार्यक्रम का संचालन सभा मंत्री प्रकाश वैद ने किया।

चेन्नई

आचार्यश्री महाप्रज्ञजी का 105वां जन्मदिवस प्रज्ञा दिवस के रूप में मुनि हिमांशुकुमारजी ठाणा 2 के सान्निध्य में जैन तेरापंथ परिवार केएलपी की आयोजना में केएलपी अभिनन्दन अपार्टमेंट के संयम वाटिका, पट्टालम्, चेन्नई में मनाया गया। धर्म परिषद् को सम्बोधित करते हुए मुनि हिमांशुकुमार ने कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ प्रबल गुरु कृपा, भाग्य और पुरुषार्थ के मूर्त रुप थे। उन्होंने अपने दीक्षा गुरु आचार्य कालूगणी और शिक्षागुरु आचार्य तुलसी दोनों की विशेष कृपा प्राप्त की। आचार्यश्री के भाग्य का उल्लेख करते हुए मुनि ने आगे कहा कि उन्होंने जिस किसी कार्य को प्रारंभ किया, उसे कुशलता से निष्पत्ति पूर्ण रूप में सम्पन्न किया। महाप्रज्ञ की पुरुषार्थ साधना को सरल शब्दों में अभिव्यक्त करते हुए कहा कि आचार्यश्री ने जो प्राप्त किया, वह हम भी पुरुषार्थी बन प्राप्त कर सकते हैं। उपस्थित जन समूह को प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आचार्यश्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त प्रेक्षाध्यान पद्धति को हम जानें, समझें और प्रतिदिन की दिनचर्या में जोड़ें। श्वास प्रेक्षा एवं दीर्घ श्वास के नियमित प्रयोग से जीवन को रुपान्तरित और आनंदमय बनाया जा सकता है। इससे पूर्व मुनि हेमन्तकुमार ने अपने वक्तव्य में कहा कि आचार्य महाप्रज्ञ ने अपनी प्रज्ञा का जागरण किया। 'प्रज्ञा' शब्द का विवेचन करते हुए बताया कि हमारे भीतर से जो स्वतः स्फुरित होता है, जिसके लिए हमें बाह्य साधन आदि कि उपेक्षा नहीं होती, उसे प्रज्ञा कहते हैं। महाप्रज्ञ का प्रारंभिक जीवन सामान्य ही था। जब उन्होंने पुरुषार्थ को अपनाया, तब उनकी विशेषता की यात्रा प्रारंभ हुई और आगे बढ़ते हुए वे एक अध्येता कवि, लेखक, व्याख्याकार, प्रवचनकार आदि के रूप में विश्व विख्यात हुए। मुनिश्री ने जीवन में पुरुषार्थ को अपनाने की प्रेरणा प्रदान करते हुए कहा कि आलस्य हमारे जीवन के किसी भी रुप और अवस्था के लिए अच्छा नहीं है। इस अवसर पर केएलपी की बहनों ने आचार्य महाप्रज्ञ के प्रति श्रद्धास्वर प्रस्तुत करते हुए गीतिका का संगान किया।

शाहदरा, दिल्ली

आचार्य श्री महाश्रमणजी की सुशिष्या साध्वी संगीतश्रीजी के सान्निध्य में आचार्य महाप्रज्ञ जी का 105वां जन्म दिवस विवेक विहार स्थित शांतिलाल पटावरी के निवास स्थान पर आयोजित हुआ। कार्यक्रम का प्रारम्भ साध्वीवृंद द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम् के संगान से हुआ। साध्वीश्री ने कहा- आचार्य महाप्रज्ञ जी प्रज्ञा के धनी थे। आपके जीवन में ज्ञानभक्ति, आत्मभक्ति, गुरुभक्ति बेजोड़ थी। समर्पण, विनम्रता, सहिष्णुता के गुण ने आपके जीवन को शिखरों तक पहुंचाया। आचार्य महाप्रज्ञ के मस्तिष्क की तुलना किसी से नहीं की जा सकती। आपकी चिंतन शैली बेजोड़ थी इसी का परिणाम हम देखते हैं कि आपने प्रेक्षाध्यान, जीवन-विज्ञान जैसे अवदान संपूर्ण मानव जाति को दिए। आराध्य की अभ्यर्थना के क्रम में साध्वी शांतिप्रभाजी, साध्वी कमलविभाजी ने अपनी मंगल भावनाएं प्रस्तुत की। इसी क्रम में अणुविभा की संगठन मंत्री डा. कुसुम लूनिया, तेरापंथ सभा शाहदरा के अध्यक्ष राजेंद्र सिंघी, गांधीनगर सभा के अध्यक्ष निर्मल छल्लानी, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल अध्यक्ष सरोज सिपानी, तेयुप दिल्ली के अध्यक्ष राकेश बेंगाणी, पूर्वी दिल्ली महिला मंडल की बहनें, बोकड़िया परिवार की बहनों ने अपने विचार वक्तव्य व गीत के माध्यम से प्रस्तुत किए। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मुदिताश्रीजी ने किया।

राजाजीनगर

तेरापंथ युवक परिषद् राजाजीनगर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर श्रीरामपुरम के अंतर्गत आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के 105वें जन्मदिवस के अवसर पर रियायती लिपिड प्रोफाइल परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। कैंप में कुल 62 सदस्यों ने लाभ लिया। तेयुप से निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश गन्ना, नव मनोनीत अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया एवं राजेश देरासरिया ने अपनी सेवाएं प्रदान की।

तोशाम

मुनि देवेंद्रकुमार जी एवं तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 105वां जन्म दिवस का कार्यक्रम प्रज्ञा दिवस के रूप में मनाया गया। ज्ञानशाला के बच्चों ने 'ऊं जय महाप्रज्ञ गुरुदेव' गीत का संगान किया। मुनि देवेंद्रकुमार जी ने कहा आचार्य श्री महाप्रज्ञ अपनी प्रज्ञा रश्मियों से 20वीं और 21वीं सदी को उजालने वाले ऊर्जा पुंज थे। वे महान दार्शनिक, चिंतक, लेखक और अध्यात्म के महान साधक थे। प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अहिंसा समवाय आदि का प्रवर्तन कर आध्यात्मिक वैज्ञानिक व्यक्तित्व के निर्माण, नए मानव नए विश्व और नई अर्थव्यवस्था संरचना का नया चिंतन प्रस्तुत किया। तपोमूर्ति मुनि पृथ्वीराज जी ने कहा आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी प्रज्ञा पुरुष आचार्य थे। आचार्य श्री के समता, सहनशीलता, गुरु के प्रति समर्पण भाव आदि गुणों का वर्णन करते हुए मुनिश्री ने सुमधुर गीत का संगान किया। मुनि आर्जवकुमार जी एवं मुनि जिज्ञासु कुमार जी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के संस्मरणों को सुनाया एवं गीत का संगान किया। महिला मंडल, कन्या मंडल, ज्ञानशाला प्रशिक्षिका, कमलेश जैन, रेखा जैन ने गीत एवं वक्तव्य के द्वारा अपनी प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थी जियांश ने आध्यात्मिक एबीसीडी का संगान किया। भिवानी से समागत एडवोकेट सुरेंद्र जैन ने अपने विचार रखे। सभा अध्यक्ष पवन जैन, नरेंद्र जैन, पंकज जैन ने गीत एवं भाषण के माध्यम से आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति अपने श्रद्धा भाव अर्पित किए।

विजयनगर

प्रेक्षा प्रणेता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के 105वें जन्मदिवस का भव्य कार्यक्रम साध्वी सिद्धप्रभा जी ठाणा-4 के सान्निध्य में विजयनगर में मनाया गया। साध्वीश्री ने महात्मा महाप्रज्ञ के जीवन पर आधारित विस्मयकारी घटनाओं के माध्यम से संतुलित जीवन जीने के महनीय सूत्रों का विवेचन किया। भारत के पूर्व राष्ट्रपति अब्दुल कलाम और आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा रचित साहित्य की चर्चा की। साध्वीश्री ने कहा - आचार्य श्री ने तेरापंथ धर्म संघ एवं मानव मात्र के उत्थान एवं विकास के लिए प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान जैसे आयाम दिए। साध्वी मलययशा जी, साध्वी आस्थाप्रभाजी, साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने शब्द चित्र के माध्यम से आचार्य श्री महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त अवदानों प्रेक्षा ध्यान, जीवन विज्ञान, साहित्य, जैन विश्व भारती, सरदारशहर आदि की मनमोहक सैर कराई। प्रेक्षा फाउंडेशन से छत्तर सिंह मालू ने मंगलाचरण किया। तेयुप निवर्तमान अध्यक्ष राकेश पोखरणा ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी दीक्षाप्रभाजी ने किया।

तत्त्व ज्ञान प्रशिक्षण एवं ज्ञान विकास कार्यशाला

नई दिल्ली।

डॉ. साध्वी कुंदनरेखाजी के सान्निध्य में ज्ञान विकास कार्यशाला का आयोजन अणुव्रत भवन में संपन्न हुआ। साध्वीश्री ने कहा- तत्वज्ञान जीवन जीने का विज्ञान है। इससे अज्ञान रुपी अंधकार का विलय तो होता ही है, इसके साथ-साथ सत्य के साक्षात्कार का मार्ग भी प्रशस्त होता है। उन्होंने आगे कहा- भगवान महावीर ने मनुष्यों को तीन मंत्र दिये- हेय, ज्ञेय, उपादेय।

ज्ञान के द्वारा सभी पदार्थों को जानना, उसके पश्चात त्याज्य वस्तु का, विचारों का त्याग कर ग्रहणीय पदार्थों एवं भावों को स्वीकृत कर आगे बढ़ने वाला उन्नत जीवन जीता है। कार्यशाला की मुख्य प्रशिक्षिका कोलकाता निवासी डॉ. पुखराज सेठिया ने साधिक़ एक घंटे तक तत्व ज्ञान को आसान तरीक़े से समझाते हुए जैन दर्शन में लोक की अवधारणा पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि छह द्रव्यों से युक्त इस लोक में चारों गतियों के जीव सहित सिद्धात्माएं भी निवास करती हैं।

आचार्य श्री तुलसी के 28वें महाप्रयाण दिवस एवं आचार्य श्री महाप्रज्ञ के 105वें जन्मदिवस के अवसर पर आयोजित इस कार्यशाला में सायर बैंगानी ने गुरुद्वय की अभ्यर्थना में अपनी प्रस्तुति दी। मुख्य अतिथि भारतीय जनता पार्टी दिल्ली प्रदेश की मंत्री सारिका जैन ने भी तत्व ज्ञान में रुचि दिखाते हुए उससे जुड़े रहने का संकल्प किया। अ.भा.त.म.मं की संगठन मंत्री नीतू पटवारी की भी गरिमामय उपस्थिति रही। कार्यक्रम का मंगलाचरण मध्य दिल्ली महिला मंडल की अध्यक्षा दीपिका छल्लानी ने एवं संचालन साउथ दिल्ली की अध्यक्षा शिल्पा बैद ने किया। मध्य दिल्ली और साउथ दिल्ली द्वारा आयोजित इस कार्यशाला में मध्य दिल्ली से लगभग 30 बहनें और साउथ दिल्ली से लगभग 25 बहनों के साथ नोएडा, गुरुग्राम, पश्चिमी दिल्ली, उत्तरी दिल्ली की बहनों ने बढ़-चढ़ कर रुचि दिखायी और ज्ञान का अर्जन किया।

विसर्जन दिवस पर सभी बहनों ने साध्वीश्रीजी की प्रेरणा से 600 से अधिक खाद्य पदार्थ का सेवन करने का त्याग लिया।

रक्तदान शिविर का आयोजन

अहमदाबाद। तेरापंथ युवक परिषद् अहमदाबाद एवं चैंबर ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री (जीसीसीआई) द्वारा रक्तदान कैंप का आयोजन न्यू क्लॉथ मार्केट, रायपुर अहमदाबाद में हुआ।

कैंप में मास्कती महाजन के अध्यक्ष गौरांग भगत, जीसीसीआई के वाइस प्रेसिडेंट मिहिर पटेल एवं सेक्रेटरी अपूर्व शाह, राजस्थान हॉस्पिटल के अध्यक्ष पी. आर. कांकरिया, गुजरात बीजेपी के सह कोषाध्यक्ष धर्मेंद्र शाह, एमबीडीडी रिदम के वेस्ट जॉन कोडिनेटर संदीप मांडोत एवं अनेक गणमान्य व्यक्ति की गरिमामय उपस्थिति रही। कैंप के लिए इंडियन रेड क्रॉस ब्लड बैंक का सहयोग मिला जिसमें 171 यूनिट ब्लड एकत्रित हुआ।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विविध कार्यक्रम का आयोजन

चेन्नई

जो हमारे स्वास्थ्य को संतुलित व स्वस्थ बनाता है, मन को शुद्ध बनाता है, आत्मा को पवित्र बनाता है- उसे योग कहते हैं। योग के माध्यम से हमें शारीरिक, मानसिक एवं भावनात्मक आरोग्य की प्राप्ति होती है। उपरोक्त विचार दसवें अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस पर मुनि हिमांशुकुमारजी ने अणुविभा के तत्वावधान में अणुव्रत समिति, चेन्नई एवं श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट, ट्रिप्लीकेन की आयोजना में तेरापंथ भवन में 'योग अपनाएं- आरोग्य पाएं' कार्यक्रम में व्यक्त किए। मुनिश्री ने आगे कहा कि शरीर साधने की प्रक्रिया श्वास एवं मन को साधने में सहायक बनती है। यौगिक क्रियाएं आरोग्य प्रदान करती है। जैसे मनोयोग से मन की चंचलता कम होती है एवं भावयोग से भावों की शुद्धि होती है। योग से हम आत्मतत्व तक पहुंच सकते है। अपने व्यक्तित्व एवं जीवन को परिष्कृत कर सकते है। मुनि हेमंतकुमारजी ने कहा कि योग ऐसी साधना है जिससे व्यक्ति स्वयं से जुड़ जाता है। स्थूल जगत से सूक्ष्म जगत की ओर मुड़ना योग से संभव है। यौगिक क्रियाएं स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद होती हैं। स्वास्थ्य का अर्थ है पूर्णता का अहसास। स्वास्थ्य के पाँच चिकित्सक- हवा, धूप, पानी, पृथ्वी और भोजन। पानी बैठकर एवं घूंट-घूंट पीना लाभप्रद हो सकता है। प्रदूषित हवा से यथासंभव बचाव एवं धूप का ताप स्वास्थ्य के लिए उपयोगी होता है। पृथ्वी से सीधे संपर्क के लिए संभव हो तो बिना जूते चप्पल के गमन कर सकते हैं और मिट्टी के बर्तनों का प्रयोग कर सकते हैं। सात्विक भोजन भी स्वास्थ्य के लिए वांछनीय माना जा सकता है।

दक्षिण मुंबई

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर दक्षिण मुंबई तेरापंथ समाज की सभी संस्थाओं ने मिलकर अणुव्रत सभागार, मरीन ड्राइव में योग दिवस मनाया। प्रशिक्षिका मनीषा परमार ने बहुत ही सुंदर तरीके से योगासन, प्राणायाम आदि करवाए एवं सभी की जिज्ञासाओं का भी समाधान किया। तेरापंथ सभा दक्षिण मुंबई के अध्यक्ष सुरेश डागलिया ने सभी का स्वागत किया। तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष गिरीश सिसोदिया, महिला मंडल अध्यक्ष वनिता धाकड़, दक्षिण मुंबई सभा के उपाध्यक्ष नितेश धाकड़ ने अपने विचार व्यक्त किए। महिला मंडल उपाध्यक्षा पुष्पा कच्छारा ने योग प्रशिक्षिका मनीषा परमार का परिचय करवाया। सभा के मंत्री दिनेश धाकड़ ने आभार प्रकट किया।

डोम्बिवली, मुंबई

डोंबिवली के जन गण मन स्कूल में दसवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। संस्था के डायरेक्टर डॉ. राजकुमार एवं प्रेरणा कोल्हे ने बच्चों को आज के दिन का महत्व समझाया। तत्पश्चात जीवन विज्ञान गीत का सामूहिक संगान किया गया। योग प्रशिक्षकों द्वारा योग, प्रेक्षाध्यान, महाप्राण ध्वनि, विविध आसन आदि करवाए गए। विद्यालय के 1000 से अधिक छात्रों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया। विद्यालय में जीवन विज्ञान कक्ष तथा अणुव्रत कक्ष का निर्माण किया गया है तथा पिछले दो वर्षों से नियमित जीवन विज्ञान का पाठ्यक्रम पढ़ाया जा रहा है। प्रथम सत्र में विनोद राठौड़ और प्रीती महाडिक तथा द्वितीय सत्र में श्रीपाल मेहता ने योग अभ्यास करवाया। हेमलता मुनोत ने आभार ज्ञापित किया।

कटक

तेरापंथ युवक परिषद, कटक द्वारा 'फ़िट युवा हिट युवा' के अन्तर्गत 'इंटरनेशनल योगा डे' का आयोजन तेरापंथ भवन में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत पानमल नाहटा ने नमस्कार महामंत्र से की। कटक तेरापंथ सभा के अध्यक्ष मुकेश सेठिया ने योगा ट्रेनर राकेश साहू का स्वागत किया।

तेरापंथ युवक परिषद कटक के अध्यक्ष विकास नौलखा ने योगा ट्रेनर का सम्मान किया। योगा ट्रेनर राकेश साहू ने विभिन्न प्रकार के योग आसन कराए और कहा कि नियमित योगासन के अभ्यास से मानव शरीर की कई बीमारियों को आप जड़ से खत्म कर सकते हैं, वहीं मानसिक तनाव और ऊर्जा को भी बढ़ा सकते हैं। इस कार्य को सम्पादित करने में परिषद के 'फिट युवा हिट युवा' संयोजक ऋषभ खटेड़ और तेरापंथ सभा के सह-मंत्री मनीष सठिया का अथक परिश्रम रहा। कार्यक्रम के सफल आयोजन में तेरापंथ सभा, युवक परिषद, महिला मंडल, किशोर मंडल और कन्या मंडल का विशेष सहयोग मिला। अंत मे आभार ज्ञापन सभा के मंत्री रणजीत दुगड़ द्वारा किया गया।

सैंथिया

तेरापंथ युवक परिषद द्वारा योग दिवस के उपलक्ष्य पर सैंथिया ऋषभ भवन में योग सत्र का आयोजन हुआ। सत्र का संचालन योग विशेषज्ञ बवन कुमार पांडे के मार्गदर्शन में किया गया, जिसमें उन्होंने योग के महत्व को बताते हुए अनेक प्रयोग करवाए। तेयुप अध्यक्ष सौरव पुगलिया ने आभार ज्ञापन किया।

मुंबई

अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में अणुव्रत समिति मुंबई द्वारा जोगेश्वरी, घाटकोपर, वसई, भिवंडी, सांताक्रुज, डोंबिवली एवं नवी मुंबई महानगर म्युनिसिपल की 20 स्कूलों में योग एवं जीवन विज्ञान का प्रशिक्षण दिया गया। जोगेश्वरी में अचलगच्छ जैन देरासर में तथा घाटकोपर में कच्छी कड़वा पाटीदार ज्ञाति ट्रस्ट में भी कार्यक्रम आयोजित किया गया। वसई तेरापंथ भवन में प्रकाश गुंदेचा, भिवंडी में विधि जैन, सांताक्रुज वाकोला के सेंट थॉमस स्कूल में रिंकल गाला, तेरापंथ भवन डोंबिवली में योग प्रशिक्षक श्रीपाल मेहता, नवी मुंबई की स्कूलों में वरिष्ठ प्रेक्षा प्रशिक्षक एन. सी. जैन, मालती बेन एवं उनकी टीम की प्रशिक्षित बहनों द्वारा 20 स्कूलों में योग एवं प्राणायाम के प्रयोग करवाए गए। कार्यक्रमों में युवक परिषद, किशोर मंडल, महिला मंडल सभी ने लाभ लिया।

साउथ कोलकाता

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के उपक्रम फिट युवा-हिट युवा के अन्तर्गत तेरापंथ युवक परिषद् साउथ कोलकाता एवं प्रेक्षा फाउंडेशन के तत्वावधान में साउथ कोलकाता श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के सहयोग से इंटरनेशनल योगा डे कार्यशाला का आयोजन किया गया। त्रिपति वंदना एवं मंच संचालन वंदना डागा द्वारा किया गया।

डॉ. सुनीता सेठिया ने स्वागत वक्तव्य दिया। योग प्रशिक्षिका सुनीता जैन ने योग एवं ध्यान की विस्तृत जानकारी देते हुए विभिन्न प्रकार की योग क्रियाएं, आसन, प्राणायाम, ध्यान करवाया जिसमें राज चोरिडिया, ज्योति बैद, सुनीता जैन, राज कुमारी बरडिया का सहयोग प्राप्त हुआ।

उत्तर कोलकाता

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान से तेरापंथ युवक परिषद उत्तर कोलकाता द्वारा फिट युवा हिट युवा के तहत इंटरनेशनल योगा डे मुनि जिनेशकुमारजी के सान्निध्य में मनाया गया। प्रेक्षा फाउंडेशन की ओर से मंजु सिपानी के निर्देशन योग एवं ध्यान का अभ्यास किया गया। मुनि जिनेशकुमारजी ने योग और प्रेक्षाध्यान का जीवन में महत्व बताया।

कुर्ला, मुंबई

स्वामी विवेकानंद विद्यालय कुर्ला में दसवां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बड़ी ऊर्जा और जोश के साथ मनाया गया। विद्यालय की प्राचार्या गीता सिंह की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में वेस्लार्क संस्था की सदस्य एवं योगगुरु अंजना श्रीवास्तव के नेतृत्व में विद्यार्थियों ने शिक्षा और योग के महत्व को जाना और कुछ योगासनों का अभ्यास किया।

कार्यक्रम में जीवन विज्ञान सहसंयोजिका हेमलता मुनोत की प्रेरणा से विद्यार्थियों द्वारा जीवन विज्ञान गीत का संगान किया गया।

सम्यक् और विवेकपूर्ण पुरुषार्थ करें : आचार्यश्री महाश्रमण

आलस्य के कारण धर्म का कार्य कल पर नहीं छोड़ें, उसे आज और अभी करने का प्रयास करें।

बारडोली
11 जुलाई, 2024

भैक्षवगण के सरताज आचार्यश्री महाश्रमणजी आज बारडोली पधारे। महामनीषी ने पावन प्रेरणा प्रदान कराते हुए फरमाया कि हमारी दुनिया में काल एक द्रव्य है। चार दृष्टियां बतायी जाती हैं- द्रव्यतः, क्षेत्रतः, कालतः और भावतः। हमारे जीवन में काल और समय का अनिवार्य स्थान है। कोई भी कार्य करना है तो काल (टाइम), क्षेत्र (स्पेस), कार्य करने वाला व्यक्ति और करणीय कार्य चाहिए, इतना होने पर प्रयास करने से कार्य सम्पन्न हो सकता है।

आदमी सफलता पाना चाहता है और कार्य करने में आलस्य करता है, तो सफलता कैसे प्राप्त हो? आलस्य मनुष्यों का एक ऐसा शत्रु है जो शरीर में रहता है और आदमी के विकास में बाधक बन जाता है। आलस्य महान शत्रु है, तो श्रम-उद्यम आदमी का बन्धु है। धूप और छाया की तरह आलस्य और पुरुषार्थ में कोई मेल नहीं है।

धर्म का कार्य करना है, सब अनुकूलताए हैं तो उसे कल पर क्यों छोड़ते हो? आज और अभी कार्य शुरू करो। शास्त्र में कहा गया है- कल की बात वह सोचता है, जिसकी मौत के साथ दोस्ती है अथवा जो दौड़ने में तेज हो जिसे मौत पकड़ न पाए अथवा जो अमर है। पर वास्तव में ऐसा कुछ नहीं होता है। अच्छा कार्य, धर्म का कार्य हमें कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। सम्यक् और विवेकपूर्ण परिश्रम करना चाहिए।

जो उद्योगी परिश्रमी व्यक्ति होता है, लक्ष्मी उसका वरण करती है। भाग्य को प्रधान मानने वाले कुत्सित पुरुष हैं। भाग्य भरोसे मत रहो और पुरुषार्थ करो। पुरुषार्थ करने पर भी सफलता नहीं मिले फिर तुम्हारा कोई दोष नहीं है। मानव जीवन हमें प्राप्त है, मानव जीवन का फायदा उठाना चाहिए। ऐसा जीवन दुर्लभ है, इसमें सम्यक् पुरुषार्थ और धर्म का पुरुषार्थ करें।

धर्म को सुन लिया, जान लिया, फिर भी प्राप्त धर्म को छोड़कर पाप के रास्ते पर चला जाता है, ऐसा व्यक्ति अपने घर में लगे हुए कल्पतरू के वृक्ष को उखाड़ फेंकता है और धतूरे के पौधे को लगा देता है। चिंतामणी रत्न को पाकर उसे फेंक देता है और कांच के टुकड़े को उठाता है। श्रेष्ठ हाथी पास में है उसे बेचकर गधे को खरीद लेता है। ऐसा व्यक्ति संसार में मूर्ख-नादान होता है।

जीवन में विपत्ति आए तो आए पर धर्म को नहीं छोड़ना चाहिए। अर्हन्नक श्रावक की तरह धर्म में दृढ़ रहें। धर्म को छोड़ देंगे तो संसार सागर में डूब जाएंगे। कठिनाई में तो धर्म की परीक्षा होती है, धर्म में आस्था अडौल रहे। आलस्य के कारण धर्म का कार्य कल पर नहीं छोड़ें, उसे आज और अभी करने का प्रयास करें। हम भाग्यवाद को जान लें पर पुरुषार्थवाद को काम में लें, यह काम्य है।

पूज्यवर के स्वागत में स्थानीय सभा अध्यक्ष महावीर दक, अणुव्रत समिति अध्यक्ष राजेश चोरड़िया, टीपीएफ से सुशील सरनोट, तेयुप अध्यक्ष संजय बडोला, तेममं अध्यक्षा धर्मिष्ठा मेहता, गौतम बाफना, राजेंद्र बाफना, जयेश मेहता, गिरधारीलाल बोहरा, समर्थलाल बाबेल आदि ने अपने विचार व्यक्त किए। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेयुप ने गीत से अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। ज्ञानशाला ज्ञानार्थियों ने मुनि गजसुकुमाल पर एक सुन्दर नाटिका की प्रस्तुति दी। कन्यामंडल ने छः आरों पर प्रस्तुति दी। किशोरमंडल की भी सुन्दर प्रस्तुति हुई। ललिता कुमठ ने 25 की तपस्या का प्रत्याख्यान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

धर्म और अध्यात्म ही है शरण और त्राण देने वाला : आचार्यश्री महाश्रमण

जलसा फार्महाउस, बारडोली।
10 जुलाई, 2024

अध्यात्म की राह दिखाने वाले तीर्थकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमणजी ने मंगल देशना प्रदान कराते हुए फरमाया - शास्त्र में कहा गया है कि वे लोग जो तुम्हारे स्वजन, मित्र आदि हैं, तुम्हारे त्राण के लिए सक्षम नही हो सकेंगे, न शरण दे सकेगें। तुम भी उनके लिए त्राण और शरण देने में समर्थ नही हो सकते।

कोई किसी को मौत से, बुढ़ापे से, बीमारी से नहीं बचा सकता, यह दुनिया की अत्राणता, अशरणता है। व्यवहार में कोई किसी को त्राण अथवा शरण देने वाला हो सकता है, पर निश्चय में कोई त्राण-शरण देने वाला नही है। दुनिया में धर्म एक त्राण है, उसकी आराधना करनी चाहिए। एक समय ऐसा आएगा जब सारे दुःखों से मुक्त हो, मुक्तिश्री का वरण हो सकता है। केवली प्रज्ञप्त धर्म शरण देने वाला है। अरिहन्त, सिद्व और साधु भी शरण देने वाले होते हैं। धर्म की शरण लेने वाला अक्षय अमर पद को प्राप्त कर सकता है।

बुढ़ापा, बीमारी और मृत्यु ये तीन चीजें है। चन्द्रमा जब राहु ग्रस्त हो जाता है तो उसे वह स्वयं झेलता है। आदमी भी बीमारी को स्वयं झेलता है, डॉक्टर, पारिवारिक जन सेवा को तैयार हो सकते हैं पर बीमारी तो आदमी को ही झेलनी पड़ेगी।

साधु तो जीवन भर के लिए साधना में लीन हैं, गृहस्थ को भी धर्म करने का अधिकार है। गुरु से पथ दर्शन प्राप्त हो सकता है पर पुरुषार्थ तो स्वयं को ही करना पड़ेगा। माता-पिता भी बच्चे का भरण पोषण करते हैं पर बड़ा होने के बाद तो उसे खुद को ही सक्षम बनना होता है।

निश्चय में तो कोई त्राण-शरण देने

वाला नहीं है। व्यवहार में कोई शरण देने वाला हो सकता है पर मूल खुद की आत्मा त्राण देगी, तभी दूसरे त्राण दे सकेगें। एक धर्म-अध्यात्म ही त्राण-शरण देने वाला है जो हमारे दुःखों को दूर करने में पूर्णतया समर्थ है। हम धर्म की शरण में रहें तो कल्याण को प्राप्त कर सकेंगे।

साध्वी चांदकुमारीजी के देवलोक गमन के पश्चात उनकी सहवर्ती साध्वी वृंद ने प्रथम बार पूज्यवर के दर्शन किए। पूज्यवर की अथ्यर्थना में साध्वीवृन्द ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

अनित्यता की अनुप्रेक्षा से करें मोह-मूर्च्छा पर प्रहार : आचार्यश्री महाश्रमण

बाजीपुरा
9 जुलाई 2024

आत्म ज्ञान प्रदाता युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी व्यारा से लगभग 13 किलोमीटर का विहार कर बाजीपुरा हाई स्कूल पधारे। पूज्यप्रवर ने आगम वाणी का रसास्वादन कराते हुए फरमाया कि हमारी इस दुनिया में नित्य तत्त्व भी हैं और अनित्य तत्त्व भी है। कोरी नित्यता भी नहीं है और कोरी अनित्यता भी नहीं है। कहीं नित्यता की प्रधानता हो सकती है, अनित्यता गौण हो सकती है तो कहीं अनित्यता की प्रधानता और नित्यता गौण हो सकती है।

दीये से लेकर आकाश तक सारे पदार्थ नित्यानित्य हैं। नित्यता की प्रधानता के आधार पर आकाश को नित्य कहा जा सकता है और आकाश में पर्याय परिवर्तन भी होते हैं इसलिए आकाश अनित्य भी है। दीया अनित्य है पर उसके परमाणु पुद्गल की अपेक्षा से वह नित्य है। जैन दर्शन में परिणामी नित्यवाद या नित्यानित्य वाद का सिद्धान्त बताया गया है। शरीर एक पर्याय है और पर्याय के नाते यह अनित्य भी है। द्रव्य है तो उसमें पर्याय भी हैं और पर्याय हैं तो उसमें द्रव्य भी है। द्रव्य नित्य होता है और पर्याय अनित्य होता है।

पच्चीस बोल के पन्द्रहवें बोल में आठ आत्माओं का उल्लेख मिलता है। उनमें पहली आत्मा द्रव्य आत्मा है। यह द्रव्य आत्मा शाश्वत है, असंख्य प्रदेशात्मक पिंड है। इसमें पर्याय परिवर्तन संभव है। एक आत्मा चार गतियों में भिन्न-भिन्न शरीरों को प्राप्त कर सकती है। शरीर अनित्य है, एक ही जीवन में पर्याय परिवर्तन होता रहता है। शरीर के पुद्गल हमेशा रहते हैं।

एक व्यक्ति किसी समय धनाढ्य रह सकता है तो कभी गरीब भी हो सकता है। शरीर भी कभी मजबूत या कमजोर हो सकता है। यह धन सम्पदा, स्वजन संबंध भी स्थायी नहीं है, अनित्य है। इस अनित्य जगत में आदमी मोह-मूर्च्छा को कम करे। शांत सुधारस में कहा गया - जिनके साथ खेले थे, जो हमारे पूजनीय थे, जिनके साथ प्रेमपूर्ण बातें करते थे, वे लोग चले गए हैं, भस्मीभूत हो गये हैं, फिर भी मैं निःशंक बैठा हूं। संसार में मैं ज्यादा मोह क्यों करूँ? अनित्यता की अनुप्रेक्षा करने से मोह-मूर्च्छा पर प्रहार हो सकता है और मोह कम हो सकता है।

यह शरीर भी अनित्य है, अशुचि से पैदा होने वाला है, अशाश्वत है, दुःख और क्लेश का भाजन है। हम शरीर के प्रति भी मोह न करें, इस चिंतन से विरक्ति का भाव बढ़ सकता है। परिवार के संबंध भी अनित्य हैं। आत्मा अलग है, शरीर अलग है।

व्यक्ति अनित्य शरीर के लिए प्रयास करता है पर वह यह भी चिंतन करे कि शाश्वत आत्मा के लिए वह क्या कर रहा है? हमारा अनित्यता का चिन्तन जितना पुष्ट रहे, स्थायी आत्मा के कल्याण के लिए प्रयत्न करें, हमारी चेतना निर्मल रहे, वह हमारे लिए हितकर रह सकता है।पूज्यवर के स्वागत में गंगाराम गुर्जर, पीयूष चौरड़िया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमार जी ने किया।

आचार्यश्री महाश्रमण : चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**